प्राचीन भारत

← सिन्धु घाटी सभ्यता →

→ यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है।

1826 - चार्ल्स मेसन ने सर्वप्रथम इस पर प्रकाश डाला

1853 - अलेक्जेंडर कनिंघम ने हड़प्पा का सर्वे किया

1856 - जॉन बर्टन एवं विलियम बर्टन लाहौर से कराँची के मध्य रेलवे लाइन बिछा रहे थे एवं उन्होंने अनजाने में हड़प्पा की ईंटों का प्रयोग किया।

1856 - अलेक्जेंडर कनिंघम ने दूसरी बार हड़प्पा का सर्वे किया।

1861 - भारतीय पुरातत्व विभाग (ASI) की स्थापना

* गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग के समय, अलेक्जेंडर कनिंघम को ASI का जनक कहलाता है।

1921 - सर जॉन मार्शल ने दयाराम साहनी को, हड़प्पा में उत्खनन करने हेतु नियुक्त किया।

1922 - सर जॉन मार्शल ने राखालदास बनर्जी को मोहनजोदड़ो का उत्खननकर्ता नियुक्त किया।

1924 - सर जॉन मार्शल ने सिन्धु घाटी सभ्यता / हड़प्पा सभ्यता की घोषणा की।

* इतिहासकार पीगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिन्धु घाटी सभ्यता की जुड़वाँ राजधानी कहा है।

विस्तार :-

* यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता है।
* यह लगभग 13 लाख Km^2 क्षेत्र में फैली हुई है।
* यह भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में फैली हुई है।
* यह त्रिभुजाकार सभ्यता है।

Imp. * यह कांस्ययुगीन सभ्यता है।

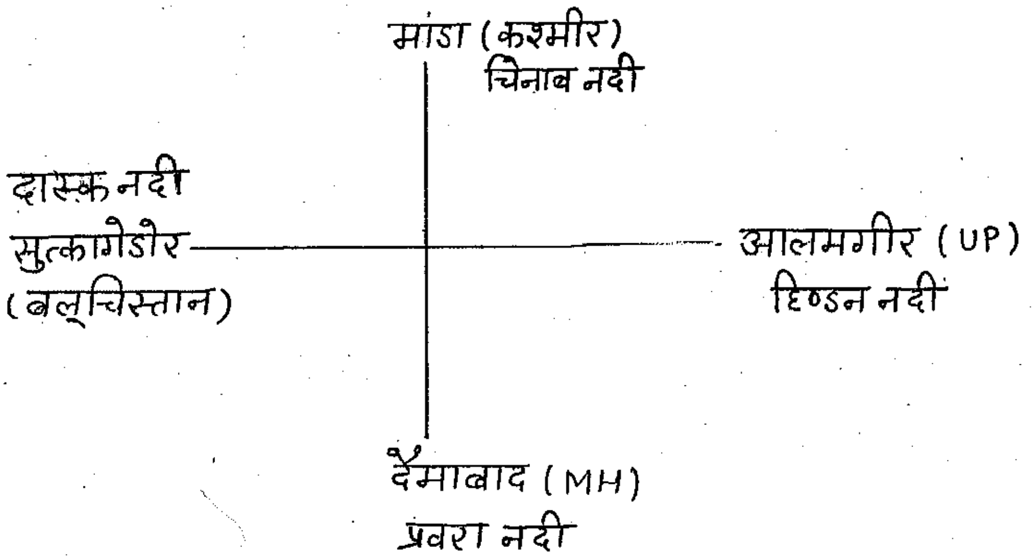

काल :-

* समय का निर्धारण C-14 पद्धति से किया जाता है।
* 2600 - 1900 BC ⇒ नई NCERT के अनुसार

2350 - 1750 BC ⇒ पुरानी NCERT के अनुसार

3250 - 2750 BC ⇒ सारगोन अभिलेख के अनुसार (म. एशिया)

स्थल :-

1. हड़प्पा :-

स्थिति = मोंटगोमरी जिला (PB, Pak.)

→ वर्तमान में शाहीवाल जिले में है।

→ रावी नदी के तट पर

→ उत्खननकर्त्ता = दयाराम साहनी

→ (i) R- 37 कब्रिस्तान

(ii) विदेशी की कब्र

(iii) इक्का गाड़ी

(iv) शृंगार पेटिका

(v) स्वास्तिक का निशान

(vi) नदी के तट पर ।2 अन्नागार मिलते हैं जो दो लाइनों में है।

(vii) पास में अनाज साफ करने का चबूतरा मिलता है।

(viii) पास में श्रमिक आवास भी मिलते हैं।

2. <u>मोहनजोदड़ो</u> :-

स्थिति = लरकाना (सिन्ध , Pak.)

* सिन्धु नदी के तट पर

उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

→ मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला
(सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार mains

(a) आकार :- 39 X 23 X 8 ft

(b) इसके उत्तर व दक्षिण में सीढ़ियाँ बनी हुई है

(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है।

(d) इसके उत्तर दिशा में 6 वस्त्र बदलने के कक्ष है।

(e) तीन तरफ बरामदे है।

(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए हैं।

(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है।

(h) सीढ़ियों के साक्ष्य भी मिलते हैं।

(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे।

(j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा

(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है।

(ii) विशाल अन्नागार

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपड़े के साक्ष्य

(v) हाथी का कपालखण्ड

(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है।

(a) यह नग्न है।

(b) इसने एक हाथ में चूड़ियाँ पहन रखी है।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है।

(a) इसने शॉल ओढ़ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है।

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है।

3. <u>लोथल</u> :-

स्थिति = गुजरात

* भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S.R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था।

→(i) यहाँ से गोदीवाड़ा (Dockyard) मिलता है।

(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति है।

(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना

(iii) चावल के साक्ष्य

(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है।

(v) घोड़े की मृण्मूर्तियाँ

(vi) चक्की के दो पाट

(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं [एकमात्र]

4. <u>धोलावीरा</u> :-

स्थिति = गुजरात

उत्खननकर्ता = रवीन्द्र सिंह बिष्ट

→ यह शहर किसी नदी के किनारे स्थित नहीं है।

→ यह शहर तीन भागों में विभाजित है :-

(i) पूर्व

(ii) मध्य

(iii) पश्चिम

→(i) यहाँ से 16 कृत्रिम जलाशय मिलते हैं।

(ii) स्टेडियम के साक्ष्य

(iii) सूचना पट्ट जो पॉलिशयुक्त है।

5. <u>चन्हूदड़ो</u> :-

स्थिति = सिन्ध (Pak.)

उत्खननकर्ता = N.G. मजूमदार

* इनकी हत्या डाकुओं ने कर दी थी।

→ यह एक औद्योगिक नगरी थी।

(i) मनके बनाने के कारखाने मिलते हैं।

(ii) कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य

6. <u>सुरकोटडा /सुरकोटदा</u> :-

स्थिति = गुजरात

(i) घोड़े की हड्डियाँ

☆ सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को घोड़े का ज्ञान नहीं था।

7. कुनाल (HR) -

(i) चाँदी के दो मुकुट

8. दैमाबाद (MH) -

(i) धातु का रथ

9. रोजदी (गुजरात) -

(i) हाथी के साक्ष्य

10. रोपड़ (PB) -

(i) मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

11. कालीबंगा -

(i) एक खोपड़ी जिसमें 6 छेद किए गए हैं अर्थात् इन लोगों को शल्य चिकित्सा का ज्ञान था।

mains

नगर नियोजन :-

→ यह विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।

→ यह अपनी विशिष्ट नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध है।

→ नगर दो भागों में बँटे हुए होते थे -

(i) पूर्वी भाग - यह आवासीय भाग होता था।

(ii) पश्चिमी भाग - यह हिस्सा दुर्गीकृत होता था एवं ऊँचे टीले पर स्थित होता था।

→ सड़के एक - दूसरे को समकोण पर काटती थी ।

→ शहर ~~ग्रिड~~ पैटर्न पर बसे हुए होते थे ।

→ घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर नहीं खुलते थे ।

अपवाद = लोथल

→ एक घर में सामान्यत: 3 या 5 कक्ष, रसोई, आँगन होता था ।

→ उन्हें सीढ़ियों का भी ज्ञान था ।

→ कुछ घरों से कुओं के साक्ष्य भी मिलते हैं ।

→ मोहनजोदड़ो से लगभग 700 कुएँ प्राप्त होते हैं ।

→ इन नगरों में उत्कृष्ठ जल निकासी व्यवस्था होती थी ।

→ मुख्य मार्ग पर नालियों को साफ करने के लिए मैन हॉल होता था ।

→ नालियों को ईंटों से ढ़का जाता था ।

→ सामान्यत: पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।

→ ईंटो का आकार 4 x 2 x 1 होता था ।

<u>राजनैतिक स्थिति</u> :-

→ जानकारी का अभाव है ।

→ सम्भवतया पुरोहित वर्ग के पास में शासन रहा होगा ।

→ सम्पूर्ण सिन्धु घाटी सभ्यता में एक ही प्रशासनिक व्यवस्था रही होगी ।

<u>सामाजिक स्थिति</u> :-

→ मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।

→ समाज संभवत: 4 भागों में विभाजित था -

(i) पुरोहित वर्ग
(ii) व्यापारी वर्ग
(iii) किसान वर्ग
(iv) श्रमिक वर्ग

→ बड़ी मात्रा में मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है।
→ यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा में हथियार मिलते हैं।
→ पुरुष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे।
→ लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे।
→ शतरंज एवं मुर्गे की लड़ाई इनके प्रिय खेल थे।
→ अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था –

(i) पूर्ण शवाधान
(ii) आंशिक शवाधान
(iii) दाह संस्कार

→ यह आत्मा व पुर्नजन्म में विश्वास करते थे।
→ लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है।

<u>धार्मिक स्थिति</u> :-

→ प्राकृतिक बहुदेववाद में विश्वास करते थे।
→ पुरुष एवं महिला देवताओं को पूजते थे।
→ इस काल में देवताओंकी मूर्तियाँ मिलती है लेकिन मन्दिर बनना आरंभ नहीं हुए थे।
→ ये अन्धविश्वासी थे।
→ ये जादू, टोने, टोटके में विश्वास करते थे।

→ बलि प्रथा में विश्वास करते थे।

→ कालीबंगा से हवनकुण्ड मिलते हैं।

→ यह वृक्ष पूजा, जल पूजा, लिंग पूजा, योनि पूजा में विश्वास करते थे।

→ इन्हें ध्यान एवं योग का ज्ञान था।

→ मोहनजोदड़ो से एक मुहर मिलती है जिस पर "आद्य शिवा" का चित्र मिलता है।

→ सर जॉन मार्शल ने इन्हें पशुपतिनाथ कहा है।

आर्थिक स्थिति :-

→ कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी।

→ अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हें बड़े बाजारों/शहरों में बेचा जाता था

→ गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी।

→ इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था।

→ लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं।

→ रंगपुर (Gujarat) से चावल की भूसी मिलती है।

→ रंगपुर उत्तर हड़प्पन स्थल है।

→ शोर्तुगाई (अफगानिस्तान) से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं।
↓
Oxus River के किनारे

→ धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं।

→ यह पशुपालन भी करते थे।

* गाय, भैंस, भेड़, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे।

* यह ऊँट, घोड़ा, हाथी से परिचित नहीं थे।

→ विदेशी व्यापार होता था।

→ सारगोन अभिलेख में सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है।

→ मेलुहा नाविकों का देश है।

→ मेलुहा हाजा (मोर के लिए प्रयुक्त) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है।

→ सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है।

☆ कपास की विश्व में प्रथम खेती भारत में हुई।

→ दिलमून (बहरीन) व मायन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे।

→ मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था।

→ वस्तु विनिमय होता था।

→ यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे।

→ लोहे से परिचित नहीं थे।

→ ताँबा + टिन = कांस्य

→ बालाकोट (Pak.) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं।

लिपि :-

→ इन्हें लिपि का ज्ञान था।

→ यह भाव चित्रात्मक लिपि थी।

→ यह दांये से बांये लिखी जाती थी।

→ इसे गोमूत्राक्षर लिपि भी कहा जाता है।

→ इसमें 375-400 भाव मिलते हैं।

→ इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।

mains.

मूर्तियाँ एवं मुहरें :-

→ यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -

1. धातु की
2. पत्थर की
3. मिट्टी की (टेराकोटा)

→ मोहनजोदड़ों से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)

→ दैमाबाद से धातु का रथ

→ मोहनजोदड़ो से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति

→ टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ

→ ज्यादातर मुहरें शैलखड़ी की बनी हुई हैं।

→ ज्यादातार मुहरें चौकोर हुआ करती थी।

→ मुहरें वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी।

→ (i) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी → सबसे ज्यादा)

→ मोहनजोदड़ो व हड़प्पा से बड़ी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती हैं।

(ii) कूबड़ वाला सांड के चित्र

not main

सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के कारण :-

1. गार्डन चाइल्ड व मार्टीमर व्हीलर के अनुसार - आर्यों का आक्रमण
2. S.R. राव, सर जॉन मार्शल व मैके के अनुसार - बाढ़
3. सर जॉन मार्शल के अनुसार - प्रशासनिक शिथिलता
4. अमलानन्द घोष के अनुसार - जलवायु परिवर्तन
5. U.R. केनेडी के अनुसार - प्राकृतिक आपदा
6. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार - नदियों ने अपना रूख बदल दिया

निष्कर्ष - इतनी विशाल सभ्यता के पतन के लिए बहुत सारे कारण जिम्मेदार / उत्तरदायी रहे होंगे।

कालीबंगा, राखीगढ़ी (HR), धौलावीरा ⇒ पूर्व हड़प्पाकालीन स्थल

रंगपुर, रोजदी ⇒ उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल

← वैदिक काल →

1500 – 600 BC

1. वेद
2. ब्राह्मण
3. आरण्यक
4. उपनिषद्

} यह वैदिक साहित्य है। इसे श्रुति साहित्य भी कहा जाता है।

① वेदांग
② स्मृति
③ पुराण
④ रामायण
⑤ महाभारत

} यह वैदिक साहित्य नहीं है।

वेद -

→ वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है।

→ वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।

→ वेदों की रचना आर्यों ने की।

→ आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ / कुलीन

→ वेदों को नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरुषेय माना जाता है।

→ वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को द्रष्टा कहते हैं।

→ वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था।

→ वेद 4 हैं -

I. ऋग्वेद -

* ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580 (10600) मन्त्र/ऋचा हैं।

* पहला एवं 10 वाँ मण्डल बाद में जोड़े गए हैं।

* दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल/परिवार मण्डल कहा जाता है।

* तीसरे मण्डल में गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है।

• गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।

• गायत्री मंत्र सवितृ/सावितृ (सूर्य) को समर्पित है।

* सातवें मण्डल में दशराज/दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।

भरत कबीला V/s 10 कबीले

राजा = सुदास

पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र

• यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लड़ा गया था।

* आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं।

* 9 वें मण्डल सोम को समर्पित है।

• सोम मुजवन्त पर्वत से मिलता है।

* 10 वें मण्डल के पुरुष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख/चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है।

* 10 वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है

→ ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
→ उपवेद = आयुर्वेद

II. यजुर्वेद :-

→ इसके दो भाग हैं -
1. कृष्ण यजुर्वेद
2. शुक्ल यजुर्वेद ⇒ इसे वाजसनीय संहिता कहा जाता है।

→ यह वेद गद्य एवं पद्य में लिखा गया है।
→ इसमें यज्ञ करने की विधियों का उल्लेख किया गया है।
→ इस वेद में शून्य का उल्लेख मिलता है।
→ मन्त्र का उच्चारण करने वाला = अध्वर्यु
→ उपवेद = धनुर्वेद

III. सामवेद :-

→ संगीत का प्राचीनतम स्रोत
→ वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं।
→ भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
→ मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
→ उपवेद = गन्धर्ववेद

(IV) अथर्ववेद :-

→ इसे महीवेद, भैषज्य वेद, अथर्वअंगीरस वेद भी कहा जाता है।

→ यह भौतिकवादी वेद है।

→ इसमें जादू, टोने, टोटके का उल्लेख किया गया है।

→ इसमें चिकित्सा पद्धतियों व औषधियों का उल्लेख किया गया है।

→ मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = ब्रह्म

→ उपवेद = शिल्पवेद

mains.

ब्राह्मण साहित्य :-

→ इसमें यज करने की विधियों का उल्लेख किया गया है।

ऋग्वेद -

1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कौषीतकी ब्राह्मण
3. शतपथ ब्राह्मण
4. तैतरीय / तैतिरय ब्राह्मण

(3, 4) } यजुर्वेद

सामवेद -

1. पंचविंश ब्राह्मण
2. षडविंश "
3. जैमिनिय "

अथर्ववेद -

1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य :-

→ इनकी रचना वनों (अरण्य) में की गई।

→ विषयवस्तु :-
रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

उपनिषद् :-

→ इनकी संख्या 108 है।

→ इसे वेदान्त भी कहा जाता है।

→ उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है।

→ विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् -

① कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है।

* इसमें कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है।

② छान्दोग्य उपनिषद् -

* इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।
* भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है।
* बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है।

③ वृहदारण्यक उपनिषद् -

* सबसे लम्बा उपनिषद्
* इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है।

④ जाबाल उपनिषद् -

* चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।

⑤ ऐतरेय उपनिषद् -
→ बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

⑥ मुण्डकोपनिषद् -
→ "सत्यमेव जयते"

वेदांग :-
→ ब्राह्मण वैदिक साहित्य को समझने हेतु इसकी रचना की गई।
→ इनकी संख्या 6 है।

① शिक्षा =
② व्याकरण - पाणिनी की अष्टाध्यायी व्याकरण की प्रथम पुस्तक है।
③ ज्योतिष
④ छन्द
⑤ कल्प
⑥ निरुक्त

पुराण :-
→ पुराण का शाब्दिक अर्थ = प्राचीन आख्यान
→ पुराणों की संख्या 18 है।
→ पुराणों की रचना लोमहर्ष एवं उग्रश्रवा ने की।

मत्स्यपुराण :-
* प्राचीनतम पुराण
* इसमें शुंग एवं सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है।

विष्णुपुराण - मौर्य वंश की जानकारी

वायुपुराण - गुप्तवंश की जानकारी

मार्कण्डेय पुराण - इसमें दुर्गासप्तशती मिलती है।

→ सर्वप्रथम पार्जीटर ने पुराणों के ऐतिहासिक महत्व को बताया।

स्मृति साहित्य :-

मनुस्मृति :- प्राचीनतम स्मृति

* इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है।
* जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है -
  " बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ "
* शुंग व सातवाहन वंश के समय इसकी रचना हुई।
* (mains) टीकाकार = भारुची
  कुल्लक भट्ट
  मेधातिथी
  गोविन्दराज

याजवल्क्य स्मृति :- टीकाकार = विश्वरूप
विज्ञानेश्वर
अपरार्क

नारद स्मृति :- इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है।

कात्यायन :- इसमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है।

← ऋग्वैदिक काल →

1500 - 1000 BC

→ विन्टरनित्झ ने ऋग्वैदिक काल के समय का निर्धारण किया है।

आर्यों की भौगोलिक स्थिति :-

1. दयानन्द सरस्वती — तिब्बत
2. बाल गंगाधर तिलक — उत्तरी ध्रुव
   (Book - OREON) (Book - ARCTIC HOME OF ARYANS / VEDAS)
3. डॉ. पेन्का व हर्ट — जर्मनी
4. L.D. कल्ला — कश्मीर
5. गंगाधर झा — मध्य भारत
6. मैक्समूलर — मध्य एशिया

* सर्वाधिक मान्य मत

→ आर्य आरम्भ में सप्त सैन्धव में बस गए थे।

→ सिन्धु आर्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

→ सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी।

→ ऋग्वेद के नदी सूक्त में सरस्वती को "नदीतमा" कहा गया है।

→ ऋग्वेद में सिन्धु की 5 सहायक नदियों का उल्लेख मिलता है।

→

प्राचीन नाम		आधुनिक नाम
विपाशा	–	व्यास
सतुद्री	–	सतलज
वितस्ता	–	झेलम
पुरुष्णी	–	रावी
अस्किनी	–	चेनाब / चिनाब

→ ऋग्वेद में अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख भी मिलता है।

→ ऋग्वेद में एक पर्वतमाला मुजवन्त (हिमालय) का उल्लेख भी मिलता है।

→ ऋग्वेद में गंगा व सरयु नदी का उल्लेख एक बार मिलता है एवं यमुना नदी का उल्लेख तीन बार किया गया है।

Pre.
<u>आर्यों की राजनैतिक स्थिति</u> :-

→ राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।

→ राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था।

→ राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था।

→ कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था।

→ राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।

→ अधिकतर लड़ाईयाँ जानवरों (गायों व घोड़ा) के लिए लड़ी जाती थी।

→ राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी -

① विदथ -

* प्राचीनतम संस्था
* यह धन का बँटवारा करती थी [लूट]

② सभा -

* वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
* ऋग्वेद में 8 बार इसका उल्लेख किया गया है।

③ समिति -

* जनप्रतिनिधियों का समूह
* ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है।

→ स्पश = गुप्तचर

→ राजा की सहायता हेतु 12 मन्त्री होते थे जिन्हें रत्निन (रत्नि) कहा जाता था।

→ व्राजपति :- गोचर भूमि का प्रमुख

→ बलि :- राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर

→ राजनैतिक इकाईयाँ -

① जन → गोप

② विश → विशपति

③ ग्राम → ग्रामणी

③ कुल → कुलप

<u>आर्यों की आर्थिक स्थिति</u> :-

→ आर्य यायावर जीवन व्यतीत करते थे।

→ गाय एवं घोड़ा प्रिय पशु थे।

→ पशुपालन करते थे।

→ ऋग्वेद में कृषि शब्द का उल्लेख मात्र 24 बार मिलता है।

→ उसमें से भी 21 क्षेपक है।

→ मुद्रा प्रणाली नहीं थी।

→ वस्तु विनिमय होता था।

→ व्यापार में निस्क नामक सोने के जवाहरात का प्रयोग करते थे।

आर्यों की सामाजिक स्थिति :-

→ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार थे।

→ समाज 5 वर्णों में विभाजित थे।

→ ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है हालांकि 10 वाँ मण्डल बाद में जोड़ा गया है।

→ ऋग्वेद में जाति प्रथा का उल्लेख नहीं है।

→ वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी।

→ महिलाओं की स्थिति अच्छी थी।

→ उन्हें शिक्षा का अधिकार था।

→ घोषा, अपाला, (सिकता), लोपामुद्रा आदि विदुषी महिलाएँ थी।

→ विषफला एक योद्धा महिला थी।

→ विधवा विवाह होता था।

→ नियोग प्रथा का प्रचलन था।

→ बालविवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसी बुराईयाँ नहीं थी।

→ विवाह के समय मिलने वाले उपहार को वहतु कहा जाता था।

→ अमाजु :- आजीवन अविवाहित रहकर विद्या अध्ययन करने वाली महिलाएँ

→ सामाजिक असमानता नहीं थी।

→ घरेलु दासों का प्रयोग होता था।

आर्यों की धार्मिक स्थिति :-

→ प्राकृतिक बहुदेववाद, बहुदेववाद, एकाधिदेववाद, एकेश्वरवाद एवं निर्गुण भक्ति में विश्वास करते थे।

→ एकाधिदेववाद का सिद्धान्त मैक्समूलर ने दिया।

→ द्यौस - प्राचीनतम देवता

→ इन्द्र - सबसे महत्वपूर्ण देवता

→ अग्नि - दूसरा महत्वपूर्ण देवता

* अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था।

→ वरुण - तीसरा प्रमुख देवता

* वरुण को ऋत का नियामक माना गया है।
* इस जगत की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋग्वेद में ऋत कहा जाता है।
* वरुण हजार ~~सोने~~ के स्तम्भों वाले महल में रहता है।

→ पुषन - पशुओं का देवता

→ ऋग्वैदिक आर्य यज्ञ, अनुष्ठान करते थे।

→ वे योग एवं ध्यान करते थे।

→ जादू, टोने-टोटके में विश्वास करते थे।

→ मूर्तिपूजा एवं मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते हैं।

← उत्तर वैदिक काल →

1000 – 600 BC

भौगोलिक स्थिति :-

→ आर्य गंगा - यमुना दोआब क्षेत्र तक फैल गए थे ।

→ मूजवन्त के अलावा 3 अन्य चोटियों का उल्लेख मिलता है :-

(i) त्रिककुद

(ii) मैनाक

(iii) कैञ्ज

→ आर्यों ने गंगा - यमुना दोआब में कृषि करना प्रारंभ कर दिया ।

→ उत्तर वैदिक काल में सिन्धु , उसकी सहायक नदियाँ, सरस्वती व अफगानिस्तान की नदियों का भी उल्लेख मिलता है।

→ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार राजा विदेध माधव अपने पुरोहित गौतम राहुगणा को लेकर (या के साथ) सदानीरा (गण्डक) नदी तक पहुँच गया था

राजनैतिक स्थिति :-

→ राजा का पद महत्वपूर्ण , गरिमामयी एवं वंशानुगत हो गया ।

→ राजा अब सम्राट् , विराट, स्वराट , एकराट एवं भोज जैसी उपाधियाँ धारण करने लगा ।

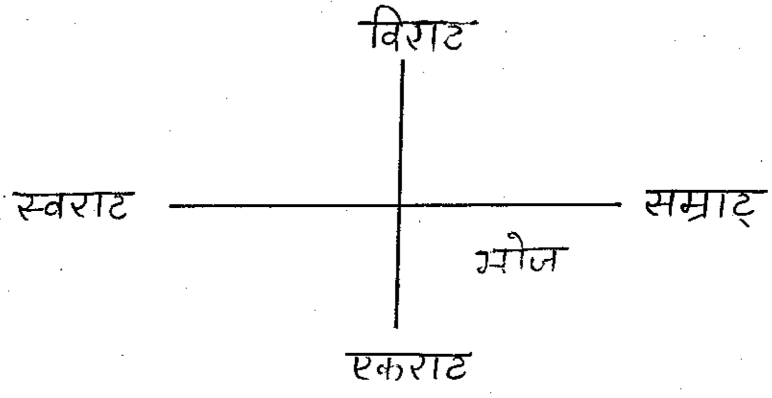

→ राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था।

① राजसूय यज्ञ - राज्याभिषेक के समय
* कालान्तर में प्रतिवर्ष मनाने लगे

→ सम्राट् हल चलाता था एवं रत्निनों के घर पर जाता था (भोज ~~कर~~ हेतु)

② अश्वमेध यज्ञ - यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था।
* समयावधि = 3 दिन

③ वाजपेय यज्ञ - इसमें खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन होता था
* राजा स्वयं रथ-दौड़ में हिस्सा लेता था एवं सदैव जीतता था।
* राजा

→ राजा के पास स्थायी सेना नहीं थी।
→ राजा को दिया जाना वाला कर = बलि
→ सम्राट निरंकुश हो गया था।
→ विदथ का उल्लेख नहीं मिलता है।
→ सभा व समिति के अधिकार कम हो गए थे।
→ अथर्ववेद में सभा व समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ बताया गया है।

आर्थिक स्थिति :-

→ 1000 BC के आसपास लोहे की खोज हो गई थी।

→ आर्यों ने खेती करना आरम्भ किया।

→ अथर्ववेद के अनुसार राजा पृथुवैन्य ने सर्वप्रथम कृषि की।

→ अथर्ववेद में टिड्डियों का उल्लेख मिलता है।

→ शतपथ ब्राह्मण में कृषि की विधियों का उल्लेख मिलता है।

→ शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता में ऐसे हल का उल्लेख मिलता है जिसे 24 बैल मिलकर खींचते हैं।

→ आर्य पशुपालन भी करते थे।

→ गाय एवं घोड़ा प्रिय पशु थे।

→ अधिशेष उत्पादन होता था।

→ उन्हें बेचने हेतु बाजार बने जिससे कालान्तर में दूसरी नगरीय क्रान्ति आरम्भ हुई।

→ मुद्रा प्रणाली का अभाव था।

→ निस्क एवं गाय द्वारा व्यापार होता था।

→ वस्तु विनिमय होता था।

सामाजिक स्थिति :-

→ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार

→ समाज स्पष्टतः 4 वर्णों में विभाजित हो गया।

→ वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित हो गई।

→ कुल एवं गोत्र शब्द का प्रयोग होता था।

→ सामाजिक असमानता नहीं थी ।

→ महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था ।

→ विधवा विवाह होते थे ।

→ नियोग प्रथा का प्रचलन था ।

→ बहुविवाह [बहुपत्नि विवाह] होते थे ।

→ बृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है।

→ अथर्ववेद में पुत्रीजन्म को दुखःदायी बताया गया है।

→ मैत्रायणी संहिता में स्त्री को शराब एवं जुए के समान बुराई बताया गया है।

→ घरेलु दासों का प्रयोग होता था ।

—

धार्मिक स्थिति :-

→ प्राकृतिक बहुदेववाद, बहुदेववाद, एकाधिदेववाद व निर्गुण भक्ति तथा एकेश्वरवाद को मानते थे ।

→ आर्य यज्ञ - अनुष्ठान करते थे ।

→ यज्ञ - अनुष्ठान जटिल हो गए थे ।

→ शूद्रों को यज्ञ का अधिकार नहीं था ।

→ शूद्रों को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।

→ ब्राह्मणों को अदायी कहा जाता था ।

→ ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों को द्विज कहा जाता था ।

→ ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रमुख देवता हो गए

→ ब्रह्मा को सृष्टिकर्ता, विष्णु को पालनहार एवं शिव को संहारक के रूप में पूजा जाता था।

→ पुषन - शूद्रों का देवता

← महाजनपद काल →

1. 16 महाजनपद
2. मगध का उत्थान
3. धार्मिक क्रान्ति –
   1. बौद्ध धर्म
   2. जैन धर्म
   3. अन्य
4. फारसी आक्रमण
5. ग्रीक आक्रमण

---

1. 16 महाजनपद :-

→ यह दूसरी नगरीय क्रान्ति थी ।

→ इसका प्रमुख कारण लोहे की खोज थी ।

→ 16 महाजनपदों का उल्लेख अंगुतर निकाय , खुद्दक निकाय → बौद्ध साहित्य एवं भगवती सूत्र में मिलता है।
(भगवती सूत्र ↓ जैन साहित्य)

	महाजनपद	राजधानी
1.	कम्बोज	हाटक
2.	गान्धार	तक्षशिला
3.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ / हस्तिनापुर
4.	पांचाल	अहिच्छत्रपुर / कांपिल्य
5.	कोसल	श्रावस्ती / साकेत (अयोध्या)

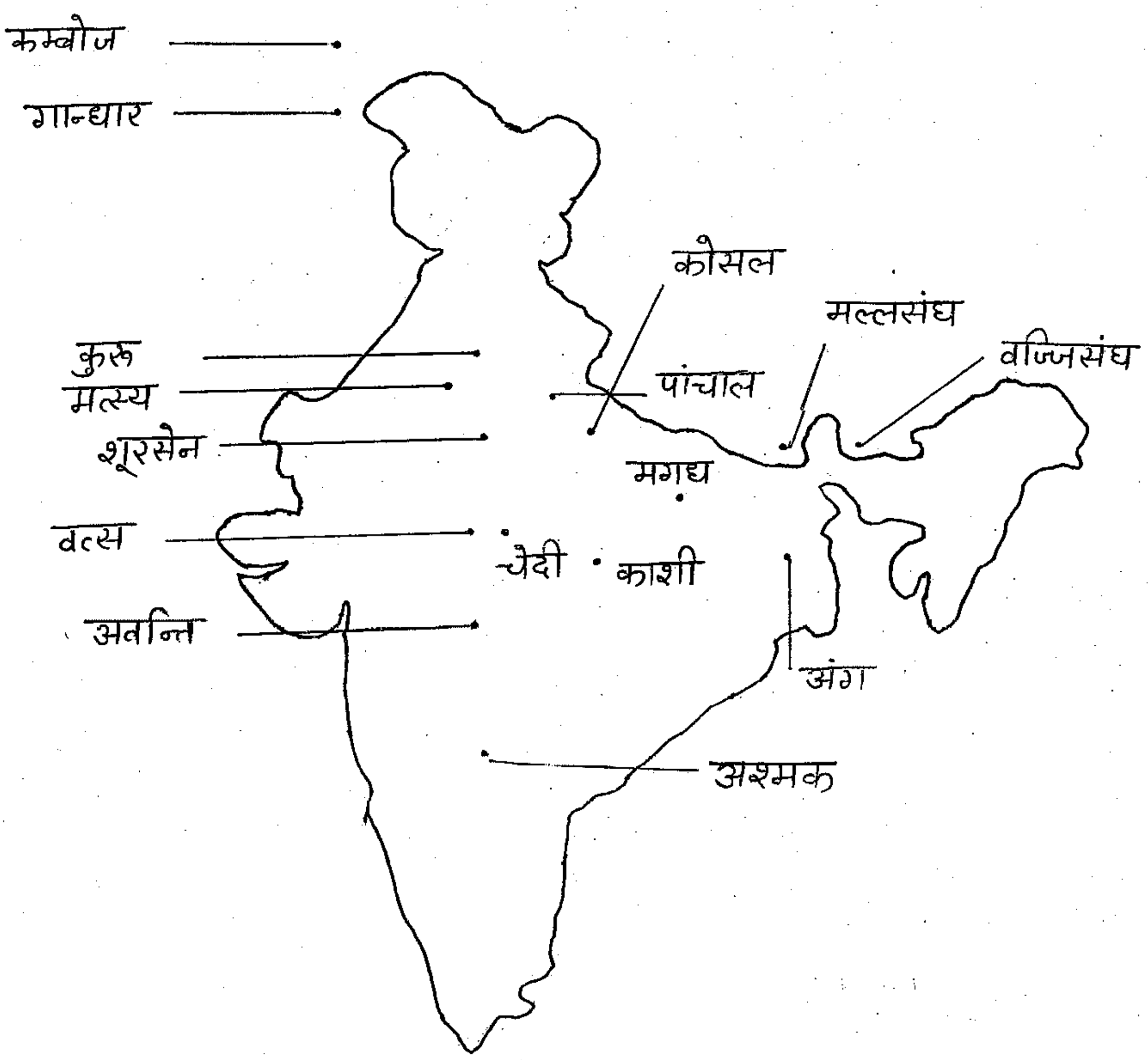

6. मल्लसंघ — कुशीनगर / कुशीनारा

7. वज्जिसंघ — विदेह / वैशाली / मिथिला

8. अंग — चम्पा

9. मगध — गिरिव्रज / राजगृह / पाटलीपुत्र

10. काशी — वाराणसी (वरुणा + अस्सी नदी)

11. शूरसेन — मथुरा

12 मत्स्य — विराटनगर

13.	वत्स	कौशाम्बि
14.	चेदी	शुक्तमती / शुक्तिमती
15.	अवन्ति	(i) उज्जैनी (ii) माहिसमती
16.	अश्मक	पोटली / पाटन

2. <u>मगध का उत्थान</u> :-

<u>कारण</u> :-

* मगध का सामरिक महत्व / भौगोलिक कारण
* नदियों का बहाव क्षेत्र
• नदियों का प्रयोग सिंचाई एवं नौकायन में किया जाता था।
* खनिज
* उपजाऊ मैदान
* मगध के आसपास के जंगलों में हाथी पाए जाते थे।
* महत्वाकांक्षी शासक

① <u>हर्यक वंश [545 - 412 BC]</u>

(I) <u>बिम्बिसार</u> :- श्रेणिक नाम से प्रसिद्ध / क्षेत्रोजस

→ प्रथम साम्राज्यवादी शासक

→ इसने कौसलनरेश प्रसेनजित की बहिन कौशलादेवी से विवाह किया।

→ इसने लिच्छवी राजकुमारी चेलन्ना से विवाह किया।

→ इसने मद्रदेश की राजकुमारी क्षेमा / खेमा से विवाह किया।

→ इसने अंग प्रदेश को जीत लिया एवं अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का गवर्नर नियुक्त किया।

→ प्रसेनजित ने इसे काशी दहेज में दे दिया।

→ इसने अपने चिकित्सक जीवक को अवन्ति के शासक प्रद्योत की चिकित्सा हेतु भेजा।

→ जीवक की शिक्षा = तक्षशिला में

→ इसके पुत्र अजातशत्रु ने इसकी हत्या कर दी।

(II) <u>अजातशत्रु</u> - यह कुणिक नाम से प्रसिद्ध था।

→ इसने काशी पर अधिकार कर लिया।

→ इसके मन्त्री वस्सकार ने वज्जिसंघ में फूट डाल दी।

→ अजातशत्रु ने वज्जिसंघ को जीत लिया एवं इस युद्ध में उसने रथमूसल एवं महाशिलाकँटक का प्रयोग किया।

→ अजातशत्रु ने प्रथम बौद्ध संगीती का आयोजन करवाया।

→ इसके पुत्र उदयन/उदायीन ने इसकी हत्या कर दी।

(III) <u>उदयन/उदायिन</u> :-

→ इसने सोन एवँ गंगा नदी के किनारे पाटलीपुत्र नामक शहर बसाया।

(IV) <u>नागदशक/नागदर्शक</u> :-

→ अन्तिम शासक

प्रथम भार्गव = परशुराम

② शिशुनाग वंश [412 - 344 BC] -

(I) शिशुनाग :-

→ संस्थापक

→ इसने अवन्ति को जीत लिया।

→ इसने वैशाली को अपनी राजधानी बनाया।

(II) कालाशोक :-

→ इसने दूसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।

→ इसने पाटलीपुत्र को पुनः अपनी राजधानी बनाया।

③ नंद वंश [344 - 322 BC]

(I) महापद्मनन्द :-

→ दूसरा भार्गव नाम से प्रसिद्ध

→ यह जैन धर्म का अनुयायी था।

→ खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार कलिंग पर आक्रमण किया एवं वहाँ नहरों का निर्माण करवाया एवं वहाँ से "जिनसेन की मूर्ति" लेकर आ गया।

→ अष्टाध्यायी का लेखक पाणिनी इसके समकालीन था।
↓
संस्कृत व्याकरण की प्रथम पुस्तक

(II) घनानन्द :-

→ इसने चाणक्य का अपमान किया।

→ चाणक्य दान विभाग का प्रमुख था।

→ घनानन्द ने जनता पर अत्यधिक कर लागू किए।

→ चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता से घनानन्द की हत्या कर दी।

mains

धार्मिक क्रान्ति

बौद्ध धर्म :-

→ संस्थापक = गौतम बुद्ध

→ बचपन का नाम = सिद्धार्थ

→ जन्म स्थान = लुम्बिनी (नेपाल)

→ जन्म = 563 BC

→ माता = महामाया

→ मौसी / सौतेली माँ = प्रजापति गौतमी

* इन्होंने बुद्ध का पालन-पोषण किया

→ कुल = शाक्य

* इसलिए बुद्ध = शाक्य मुनि

→ गोत्र = गौतम (गौतम बुद्ध)

→ पिता = शुद्धोधन

→ पत्नी = यशोधरा

→ पुत्र = राहुल

→ कौंडिन्य नामक ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की थी कि सिद्धार्थ महान् सम्राट या महान् साधु बनेगा।

→ 4 घटनाओं ने बुद्ध के जीवन को प्रभावित किया -

(i) बुजुर्ग व्यक्ति

(ii) बीमार व्यक्ति

(iii) मृत व्यक्ति

(iv) साधु

→ 29 वर्ष की अवस्था में बुद्ध ने गृहत्याग किया।

→ गुरु = आलार कलाम
 * सांख्य दर्शन के आचार्य थे।
 * बुद्ध ने इनसे योग की शिक्षा ग्रहण की।

→ द्वितीय गुरु * = रामपुत

→ बुद्ध उरुवेला चले गए थे।

→ बुद्ध ने कौंडिन्य एवं अन्य साथियों के साथ कठिन तपस्या की।

→ सुजाता नामक लड़की ने बुद्ध को खीर खिलाई।

→ बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया।

→ बुद्ध ने कहा-
"वीणा के तारों को इतना भी मत खींचो कि टूट जाए और इतना भी ढीला मत छोड़ो कि संगीत ही उत्पन्न न हो।"

→ 35 वर्ष की अवस्था में बोधगया में निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई।

→ बुद्ध शाक्य मुनि व 'गौतम बुद्ध' के रूप में प्रसिद्ध हुए।

→ बुद्ध ने सारनाथ में संघ की स्थापना की।

→ सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश कौंडिन्य एवं उसके साथियों को दिया।

→ बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए एवं सर्वाधिक वर्षाकाल श्रावस्ती में व्यतीत किया।

→ अवन्ति के शासक प्रद्योत ने बुद्ध को आमन्त्रित किया था लेकिन बुद्ध ने अवन्ति की यात्रा नहीं की।

→ बुद्ध का प्रधान शिष्य = उपालि

→ बुद्ध का प्रिय शिष्य = आनन्द

→ आनन्द के कहने पर बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश दिया।

→ बुद्ध की मृत्यु के पश्चात आनन्द को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी।

→ वैशाली की प्रसिद्ध नगरवधु आम्रपाली बुद्ध की शिष्या बन गई।

→ 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में भगवान बुद्ध की मृत्यु हो गई।

→ भगवान बुद्ध के प्रतीक -

①	हाथी / सफेद हाथी	- भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
②	सांड / कमल	- जन्म
③	घोड़ा	- गृहत्याग का प्रतीक
④	बोधिवृक्ष / पीपल	- ज्ञान का प्रतीक
⑤	पदचिन्ह	- निर्वाण का प्रतीक
⑥	स्तूप	- मृत्यु का प्रतीक
⑦	महाभिनिष्क्रमण	- 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया
⑧	सम्बोधि	- 35 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध को बोधगया में निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई।

(9) धर्मचक्रप्रवर्तन - ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् भगवान बुद्ध ने सारनाथ में कौंडिन्य एवं उसके साथियों को प्रथम उपदेश दिया जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन कहा जाता है।

(10) महापरिनिर्वाण - 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में भगवान बुद्ध की मृत्यु हुई।

→ भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ -

1. चार आर्य सत्य -

(i) दुःख है।

(ii) दुःख का कारण है।

(iii) दुःख के कारण का निवारण है।

(iv) दुःख निवारण का मार्ग है।

2. प्रतीत्य समुत्पाद -

→ भगवान बुद्ध ने दूसरे आर्य सत्य के तहत इसका प्रतिपादन किया

→ यह बौद्ध धर्म का कार्यकारण / कारणता सिद्धान्त है।

→ भगवान बुद्ध ने दुःखों का कारण अज्ञान / अविद्या / तृष्णा को बताया है।

→ इसे द्वादश निदान-चक्र भी कहा जाता है।

→ इसका शाब्दिक अर्थ "ऐसा होने पर वैसा होना" है।

3. अष्टांगिक मार्ग :-

→ भगवान ने चौथे आर्य सत्य के तहत इसका प्रतिपादन किया।

→ बुद्ध के अनुसार यदि इसका पालन किया जाए तो व्यक्ति का अज्ञान समाप्त हो जाता है।

(i) सम्यक् दृष्टि
(ii) सम्यक् संकल्प
(iii) सम्यक् वाक्
(iv) सम्यक् कर्मान्ति
(v) सम्यक् आजीव
(vi) सम्यक् व्यायाम
(vii) सम्यक् स्मृति
(viii) सम्यक् समाधि

४. क्षणिकवाद / अनित्यवाद :-

→ यह बौद्ध दर्शन का तत्व मीमांसीय / मीमांसा सिद्धान्त है।

→ भगवान बुद्ध के अनुसार इस जगत की सभी वस्तुओं का अस्तित्व क्षण भर के लिए होता है।

→ इन वस्तुओं के गुण भी क्षणिक होते हैं अर्थात यह जगत अनित्य एवं परिवर्तनशील है।

5. अनात्मवाद :-

→ भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते।

→ बुद्ध के अनुसार -
" विज्ञानों (विचार) का प्रवाह ही आत्मा है। "

→ यह विज्ञान अनित्य / क्षणिक होते हैं।

→ प्रत्येक विज्ञान मरने से पूर्व नए विज्ञान को जन्म देता है।

→ विज्ञानों का पुनर्जन्म होता है।

6. <u>निर्वाण</u> :-

→ निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक का बुझ जाना" होता है।
/ विज्ञान

→ निर्वाण बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है।

→ भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है।

→ भगवान बुद्ध ईश्वर, परमतत्व, निर्वाण जैसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देते थे एवं मुस्कुरा दिया करते थे।

☆ बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी धर्म है।

☆ बौद्ध धर्म कर्मफलवादी सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानता है।

☆ भगवान बुद्ध अज्ञेयवादी नहीं थे।

<u>बौद्ध संगीतियाँ</u> :-

	समय	शासक	स्थान	अध्यक्ष
①	483 BC	अजातशत्रु	सप्तपर्णि गुफा (राजगृह)	महाकस्सप / महाकश्यप
②	383 BC	कालाशोक	वैशाली	सर्वकामी साबकमीर
③	251 BC	अशोक	पाटलीपुत्र	मोग्गली पुत तिस्स
④	प्रथम शताब्दी	कनिष्क	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र उपाध्यक्ष = अश्वघोस

प्रथम संगीति :-

→ सुतपिटक की रचना
* रचनाकार = आनन्द
* इसमें भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ एवं जीवन की घटनाएँ मिलती है।
* सुतपिटक के खुद्दक निकाय में जातक कथाएँ मिलती है।
• जातक कथाएँ = भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों की कहानियाँ (लगभग 500)

→ विनयपिटक की रचना -
* रचनाकार = उपालि
* इसमें संघ के व साधुओं के नियम व आचार-विचार मिलते है।

दूसरी संगीति :-

→ संघ दो भागों में विभाजित हो गया -
(i) स्थविर
(ii) महासंघिक

तीसरी संगीति -

→ अभिधम्मपिटक की रचना
* इसमें बौद्ध दर्शन मिलता है।
* पिटक का शाब्दिक अर्थ 'पिटारा' होता है।
* संयुक्त रूप से इन्हें 'त्रिपटक' कहा जाता है।

चतुर्थ बौद्ध संगीति :-

→ संघ दो भागों में विभाजित हो गया -
(i) हीनयान
(ii) महायान

हीनयान	महायान
① रूढ़ीवादी	① सुधारवादी
② बुद्ध को महापुरूष मानते हैं।	② भगवान बुद्ध को ईश्वर मानते हैं
③ देवी - देवताओं को नहीं मानते	③ देवी - देवताओं को मानते हैं। e.g. प्रज्ञा की देवी = तारा
④ मूर्तिपूजा नहीं करते	④ मूर्तिपूजा करते हैं।
⑤ परम~~तत्व~~पद = अर्हत	⑤ परमपद = बोधिसत्व
⑥ व्यक्तिवादी	⑥ मानवतावादी
⑦ भाषा = पालि	⑦ भाषा = संस्कृत
⑧ श्रीलंका, बर्मा, म्यांमार, थायलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम	⑧ नेपाल, चीन, कोरिया, जापान

☆ मैत्रेय = भविष्य का बुद्ध

⑨ हीनयान
- सौतान्त्रिक → कुमारलब्ध
- वैभाषिक → वसुमित्र

⑨ महायान
- शून्यवाद → नागार्जुन → नागार्जुन ने परमतत्व को व्याख्या की व उसे शून्य बताया अर्थात् इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती।
- विज्ञानवाद/योगाचार → मैत्रेय → संस्थापक

→ कालान्तर में शंकराचार्य ने ब्रह्म को निर्गुण, निराकार बताया।

→ इसलिए शंकराचार्य को प्रच्छन्न बौद्ध (Hidden Buddh) कहा जाता है।

☆ नागार्जुन ने "सापेक्षिकता सिद्धान्त" दिया।

* नागार्जुन को "भारत का आइंस्टीन" कहा जाता है।

बौद्ध धर्म का योगदान :-

→ भगवान बुद्ध ने एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया।

→ भगवान बुद्ध ने धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक असमानता, वर्ण व्यवस्था का विरोध किया।

→ भगवान बुद्ध ने नैतिक नियमों पर अत्यधिक बल दिया।

e.g. सत्य, अहिंसा

→ बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया -

(i) झूठ नहीं बोलना
(ii) चोरी नहीं करना
(iii) हिंसा नहीं करना
(iv) नशा नहीं करना
(v) व्यभिचार नहीं करना

→ भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया जो अत्यन्त ही व्यवहारिक है।

→ स्थापत्य कला में योगदान -

* बौद्ध धर्म ने स्थापत्य कला में योगदान दिया।

* चैत्य (कार्ले, अजन्ता)
  MH → पूजाघर

* विहार (बोधगया, सारनाथ) मठ
* स्तूप (धमेख, साँची)

→ मूर्तिकला में योगदान -

* गान्धार, मथुरा व अमरावती मूर्तिकला शैलियों में भगवान बुद्ध से सम्बन्धित कई मूर्तियाँ बनी।

→ चित्र -

* अजन्ता - ऐलोरा, बाघ आदि की गुफाओं से बौद्ध धर्म सम्बन्धित चित्र मिलते हैं।

→ तक्षशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालय विकसित हुए जो शिक्षा के बड़े केन्द्र थे।

→ बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने हेतु फाह्यान एवं ह्वेन्सांग जैसे विदेशी यात्री भारत आए।

* उनके यात्रा वृतान्तों से भारत की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।

→ बौद्ध धर्म के कारण भारतीय संस्कृति का प्रचार - प्रसार विदेशों में हुआ।

→ भगवान बुद्ध ने आर्थिक सुधार किए एवं ब्याज का समर्थन किया

<u>बौद्ध धर्म के पतन के कारण</u> :-

① बौद्ध धर्म (संघ) अनेकानेक शाखाओं में विभाजित हो गया एवं उनमें आपसी फूट पड़ गई।

② बौद्ध संघ धन का केन्द्र बन गए जिससे सन्तों के जीवन में नैतिक पतन हुआ।

③ कालान्तर में बौद्ध धर्म में कालचक्रयान व वज्रयान जैसी शाखाओं का उद्भव हुआ।

* यह अतिवादी शाखाएँ थी जो जादू, टोने-टोटके, माँस-मदिरा व मैथुन में विश्वास करते थे।

(4) बौद्ध धर्म ने हिन्दू कुप्रथाओं को अपना लिया।

(5) ब्राह्मणों ने अपने धर्म में सुधारवादी आन्दोलन चलाया।

(6) कुमारिल भट्ट एवं शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

(7) कालान्तर में सामन्तों का उदय हुआ। सामन्त अहिंसा जैसी नीतियों को नहीं मानते थे।

(8) राजकीय संरक्षण का अभाव

(9) तुर्क आक्रमण

(10) तुर्क सेनापति कुतुबुद्दीन खिलजी ने नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को जलाकर नष्ट कर दिया था।

जैन धर्म :-

→ संस्थापक = ऋषभदेव (आदिनाथ)

→ 21 वें गुरू = नेमिनाथ जी

→ 22 वें गुरू = अरिष्टनेमि

→ केवल 23 वें एवं 24 वें गुरू की ऐतिहासिक जानकारियाँ मिलती हैं।

→ 23 वें गुरू = पार्श्वनाथ जी

→ पिता = अश्वसेन

* काशी के राजा थे।

→ माता = वामा

→ पार्श्वनाथ जी को सम्मेद नामक पर्वत पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।

→ पार्श्वनाथ जी ने चार व्रत दिए :-

(i) सत्य

(ii) अहिंसा

(iii) अस्तेय

(iv) अपरिग्रह

→ 24 वें गुरू = भगवान महावीर स्वामी

→ बचपन का नाम = वर्धमान

→ जन्म = 540 BC [599 BC]

→ जन्मस्थान = कुण्डग्राम (बिहार)

→ पिता = सिद्धार्थ

→ माता = त्रिशला

* यह लिच्छवी शासक चेटक की बहन थी।

→

→ पत्नी = यशोदा

→ पुत्री = प्रियदार्शना (अणोज्जा)

→ वंश = जातृक

→ भाई = नन्दीवर्धन

* महावीर स्वामी ने इसकी अनुमति से गृहत्याग किया।

→ भद्रबाहु के कल्पसूत्र के अनुसार भगवान महावीर ने गृहत्याग के 13 महीने पश्चात् वस्त्र त्याग दिए।

→ भगवान महावीर ने 30 वर्ष की अवस्था में गृहत्याग किया।

→ ५२ वर्ष की अवस्था में जुम्भिकाग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर, महावीर को ज्ञान की प्राप्ति हुई।
↓ सालवृक्ष के नीचे

→ भगवान महावीर ने सर्वप्रथम 11 ब्राह्मणों को उपदेश दिया जिन्हें "गणधर" कहा जाता है।

→ भगवान महावीर की मृत्यु के समय केवल एक गणधर सुधर्मन जीवित था।

→ भगवान महावीर का प्रथम शिष्य "जामालि" था [दामाद]

→ भगवान महावीर के विरुद्ध पहला विद्रोह जामालि ने किया।

→ भगवान महावीर के विरुद्ध दूसरा विद्रोह तीसगुप्त ने किया।

→ 72 वर्ष की अवस्था में पावापुरी में महावीर स्वामी की मृत्यु हो गई
[Bihar]

→ शिक्षाएँ -

(i) भगवान महावीर ने 5 वाँ व्रत "ब्रह्मचर्य" दिया।

(ii) भगवान महावीर ने व्रतों को दो भागों में विभाजित किया -

(a) अणुव्रत → गृहस्थ (आम आदमी)

(b) महाव्रत → मुनि

(iii) ज्ञान के प्रकार -

(a) मति - इन्द्रियजनित ज्ञान

* पशुओं को भी होता है।

(b) श्रुति - सुनकर होने वाला ज्ञान

(c) अवधि - दूर देश का ज्ञान

(d) मन : पर्यय - किसी के मन की बात जान लेना

(e) कैवल्य - अन्तिम एवं सम्पूर्ण ज्ञान

* यह केवल तीर्थंकरों को होता है।

① जीव :- चेतन तत्व / आत्मा

② पुदगल :- जैन दर्शन में जड़ तत्व को पुदगल कहा गया है।

③ बन्धन :- जब कर्म पुदगल जीव से चिपक जाते हैं तो जीव बन्धन में पड़ जाता है।

④ आस्रव :- कर्म पुदगलों का जीव की तरफ होने वाला प्रवाह

⑤ संवर :- जीव की तरफ होने वाले कर्म पुदगलों के प्रवाह का रुक जाना

⑥ निर्जरा :- जीव से चिपके हुए कर्म पुदगलों का (पृथक् होना) झड़ना

⑦ मोक्ष / मुक्ति :- जब अन्तिम कर्म पुदगल जीव से झड़ जाता है या पृथक् हो जाता है, उसे मोक्ष कहते हैं।

* जीव सिद्धशिला पर विश्राम करता है।

→ जैन दर्शन के अनुसार जीव को अनन्त चतुष्टेय प्राप्त हो जाता है।
[अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य (बल), अनन्त आनन्द]

त्रिरत्न :-

(i) सम्यक् ज्ञान

(ii) सम्यक् दर्शन

(iii) सम्यक् आचरण (चरित्र)

अनेकान्तवाद :-

→ * यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है।

* इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण हैं।
* इनमें से कुछ गुण नित्य होते हैं एवं कुछ गुण परिवर्तनशील होते हैं।

Imp.

स्यादवाद :-

* यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है।
* जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण हैं।
* हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है।
* हमारा ज्ञान सदैव देश, काल, परिस्थिति के सापेक्ष होता है।
* जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है।

→ जैन धर्म कर्मफल एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

→ जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक वस्तु में आत्मा होती है।

→ एक शरीर में एक से अधिक आत्माएँ भी हो सकती हैं।

जैन संगीतियाँ :-

①	298 BC	चन्द्रगुप्त मौर्य	पाटलीपुत्र	स्थूलभद्र उपाध्यक्ष = भद्रबाहु
②	512 AD	–	वल्लभी (Gujarat)	देवर्धि क्षमा श्रमण

प्रथम संगीति :-

→ जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया -

जैन

दिगम्बर	श्वेताम्बर
• भद्रबाहु के अनुयायी	• स्थूलभद्र के अनुयायी
• रूढ़ीवादी	• सुधारवादी
• मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक है।	• मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक नहीं है।
• महिलाओं को इस जीवन में मोक्ष सम्भव नहीं है।	• महिलाओं को इस जीवन में मोक्ष सम्भव है।
• भगवान महावीर अविवाहित थे	• भगवान महावीर विवाहित थे।
• आगम साहित्य को प्रामाणिक नहीं मानते	• 96 आगम को प्रामाणिक मानते हैं।

दिगम्बर
- वीसपंथी
- तारापंथी
- थेरापंथी

श्वेताम्बर
- पूजेरा/मन्दिरमार्गी
- ढूंढ़िरा/स्थानकवासी
- थेरापंथी

<u>द्वितीय संगीति</u> :-

→ आगम साहित्य का संकलन किया गया।

<u>जैन धर्म का योगदान</u> -

① जैनों एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया।

② जैनों ने धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वासों, वर्ण व्यवस्था आदि का विरोध किया।

③ जैनों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया।

e.g. सत्य, अहिंसा

जिससे समाज का नैतिक उत्थान हुआ

④ जैनों ने ~~स्यादवाद~~ स्यादवाद जैसा व्यावहारिक दर्शन दिया।

⑤ स्थापत्य कला में योगदान -

(i) गंगशासक चामुण्डराय ने श्रवणबेलागोल (Karnataka) में बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया।

(ii) रणकपुर एवं देलवाड़ा में सुन्दर मन्दिरों का निर्माण करवाया गया

(iii) मथुरा एवं अमरावती शैलियों में जैन धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण करवाया।

(iv) बाघ व एलोरा की गुफाओं से जैन धर्म से संबंधित चित्र मिलते हैं।

⑥ जैनों ने शिक्षा के केन्द्रों को विकसित किया जिन्हें "उपासरा" कहा जाता है।

⑦ जैनों ने आर्थिक सुधार किये जिससे अर्थव्यवस्था विकसित हुई।

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएँ :-

① दोनों अनिश्वरवादी दर्शन है।

② दोनों नास्तिक दर्शन है।

ⓐ वेदों को स्वीकार नहीं करते।

③ दोनों कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानते हैं।

④ दोनों धार्मिक आडम्बरों एवं सामाजिक असमानता का विरोध करते हैं।

⑤ दोनों के संस्थापक क्षत्रिय राजकुमार थे।

⑥ दोनों ने आर्थिक सुधार किए।

⑦ दोनों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया।

जैन व बौद्ध धर्म में असमानताएँ :-

जैन धर्म	बौद्ध धर्म
① अतिवाद या कठोरवाद में विश्वास करते हैं। अहिंसा में पूर्णत: विश्वास करते हैं।	① उदारवादी हैं। माँस खाने की अनुमति देते हैं।
② मोक्ष की व्याख्या करते हैं।	② निर्वाण की व्याख्या नहीं करते।
③ नित्य एवं अनित्यवाद में विश्वास करते हैं।	③ बौद्धों के अनुसार जगत परिवर्तन -शील है [क्षणिकवाद]
④ नित्य आत्मा में विश्वास करते हैं।	④ विज्ञानों के प्रवाह को ही आत्मा मानते हैं।
⑤ इसका विस्तार केवल भारत में हुआ है।	⑤ इसका विस्तार विश्व में हुआ है।

* 301 AD में ईसाइयत स्वीकार करने वाला प्रथम देश = आर्मेनिया

भागवत धर्म :-

→ इसकी स्थापना भगवान कृष्ण ने की।

→ इसे वैष्णव धर्म भी कहा जाता है।

→ छांदोग्य उपनिषद् में कृष्ण का पहला उल्लेख मिलता है।

→ कृष्ण को "वृष्णि वंश" का, देवकी का पुत्र व अंगीरस का शिष्य बताया है।

→ ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार कृष्ण ही नारायण है।

→ नारायण के अनुयायियों को पांचरात्रिक एवं धर्म को पांचरात्र कहा जाता है।

→ मत्स्यपुराण में विष्णु के दशावतारों का उल्लेख मिलता है।

→ 8 वाँ अवतार बलराम है।

→ 9 वाँ अवतार बुद्ध है।

→ 10 वाँ अवतार "कल्कि" होगा।

→ विष्णु का पहला उल्लेख "ऋग्वेद" में मिलता है।

→ कृष्णु को "चतुर्व्यूह" [साम्ब, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षन] के साथ रूप में पूजा जाता है।

→ पांचरात्र प्रमुख -

① कृष्ण
② लक्ष्मी
③ अनिरुद्ध
④ प्रद्युम्न
⑤ संकर्षन

→ भागवत धर्म को दक्षिण भारत में "आलवार" कहा जाता है।

शैव धर्म :-

→ इसका विकास शुंग एवं सातवाहन वंश के समय हुआ।

→ रेनीगुंटा (मद्रास) से गुडिमल्लन लिंग प्राप्त होता है।

* यह शिव की प्राचीनतम मूर्ति है।

→ शैव धर्म में कई सम्प्रदाय है -

① पाशुपत सम्प्रदाय -

* प्राचीनतम सम्प्रदाय
* संस्थापक = लकुलिश
* ग्रन्थ = पाशुपत सूत्र
* इसके अनुयायियों को पंचार्थिक कहा जाता है।

② कापालिक सम्प्रदाय -

* यह भैरव को पूजते हैं।
* यह अतिवादी है।

③ कालामुख सम्प्रदाय -

* यह अतिवादी होते हैं।

④ कश्मीरी शैव -

* संस्थापक = वसुगुप्त
* ये दार्शनिक व ज्ञानमार्गी होते हैं।

⑤ लिंगायत -

* इसका विस्तार कर्नाटक में हुआ।
* संस्थापक = ऋषि अल्लम एवं बसव

शाक्त धर्म :-

→ यह देवी को शक्ति के रूप में पूजते हैं।

→ शक्ति का प्रमुख मन्दिर कामाख्या [असम] में है।

→ कश्मीर में देवी के सौम्य रूप "शारदा देवी" को पूजा जाता है।

→ यह मन्दिर वैष्णोदेवी के नाम से प्रसिद्ध है।

Imp.

आजीवक सम्प्रदाय :-

→ संस्थापक = मक्खली पुत्त गोशाल

→ यह भगवान महावीर के समकालीन थे।

→ महावीर के साथ तपस्या की थी।

→ यह भाग्यवादी होते हैं।

→ मौर्य शासक बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

संदेहवादी सम्प्रदाय :-

→ संस्थापक = संजय वेलपुत

उच्छेदवादी :- अजीत केशकम्बलीन

अकर्मवादी :- पुरण कश्यप

फारस आक्रमण

→ हखामनी वंश

→ शासक = डेरियस / दारा / दारयबाहू

→ समय = 0520 - 0515 BD के बीच / 518 BC

→ डेरियस ने सिन्ध के आसपास के इलाकों को विजित कर लिया था एवं उसे अपना 20th प्रान्त बनाया।

→ हेरोडोटस (पुस्तक हिस्टोरिका) के अनुसार यहाँ से उसे 360 टैलेन्ट सोना राजस्व के रूप में प्राप्त होता था। (ईरान में 32 Kg. की सोने की ईंट)

→ ☆ हेरोडोटस = इतिहास का जनक

→ यह उसके कुल राजस्व का 1/3 rd था।

→ फारस आक्रमण की जानकारी उसके 3 अभिलेखों से मिलती है:-

(i) नक्श ए रुस्तम

(ii) बेहिस्तून

(iii) पर्सिपोलिस / पैरिपल्स

→ डेरियस के पुत्र जरखसीज ने (Xerxes / क्षयार्कस) भारतीय धनुर्धरों को अपनी सेना में नियुक्त किया।

ग्रीक / यूनानी आक्रमण

मदर टेरेसा मैसीडोनिया की थी।
सुकरात का शिष्य = प्लैटो
प्लैटो का शिष्य = अरस्तु

→ अलेक्जेण्डर / सिकन्दर
→ पिता = फिलिप
→ गुरु = अरस्तु
→ यह मकदूनिया / मैसीडोनिया का शासक था।
→ गांधार (तक्षशिला) के शासक आम्भी ने सिकन्दर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
→ **झेलम / वितस्ता / हाइडेस्पीज़ का युद्ध - 326 BC**
सिकन्दर V/s पोरस (पुरु)

---

* पोरस का राज्य झेलम एवं चिनाब नदी के मध्य स्थित था।
* पोरस पराजित हुआ।
* सिकन्दर पोरस की बहादुरी से प्रभावित हुआ एवं उसे उसका राज्य वापस लौटा दिया।
* सिकन्दर 19 महीने तक भारत में रुका।

→ सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी को पार करने से मना कर दिया।
→ सिकन्दर मंडनीस नामक दार्शनिक से प्रभावित हुआ।
→ वह कालानास नामक दार्शनिक को अपने साथ लेकर गया।
→ उसने भारत में तीन शहर बसाए -
① निकैया
② बहुकाफेला / बुकाफेला
③ अलेक्जेन्ड्रिया
→ तीन इतिहासकार उसके (→ सिकन्दर) साथ भारत आए -
① नियार्कस → नौसेना का प्रमुख

② आनेसिक्रेटस

③ अरिस्टोबुल्स / अरिस्टोब्युलस

← मौर्य वंश →

→ ब्राह्मण साहित्य के अनुसार ⇒ शूद्र

→ जैन व बौद्ध साहित्य के अनुसार ⇒ क्षत्रिय

→ विशाखदत्त की 'मुद्राराक्षस' के अनुसार ⇒ वृषल → निम्न वर्गीय

→ रोमिला थापर के अनुसार ⇒ वैश्य

→ सर्वाधिक मान्य मत ⇒ क्षत्रिय

1. चन्द्रगुप्त मौर्य [322 - 298 BC]

→ चाणक्य ने इसे 1000 कार्षापण में खरीदा ।

→ शिक्षा ⇒ तक्षशिला में

→ यूनानी इतिहासकारों ने इसे सेण्ड्रोकोटस एवं एण्ड्रोकोटस के रूप में उल्लेखित किया है।

→ विलियम जोन्स ने बताया कि चन्द्रगुप्त मौर्य ही सेण्ड्रोकोटस है।

→ 305 BC में सिकन्दर के सेनापति सेल्युकस निकेटर के साथ उसका विवाद हुआ।

→ स्ट्रेबो एवं एप्पियानस विवाद एवं सन्धि की जानकारी देते हैं।

→ निकेटर ने ऐरिया, अराकोसिया, जेड्रोसिया, पेरोपनीसडाई के क्षेत्र चन्द्रगुप्त को सौंप दिए।

→ निकेटर ने अपनी बेटी हेलेना / हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त से करवाया।

→ अपना दूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
↓
पुस्तक = इण्डिका

★ एरियन की पुस्तक = इण्डिका

★ पिल्नी / प्लिनी = नेचुरल हिस्टोरिका / नेचुरल हिस्ट्री

- टॉल्मी की पुस्तक = Geography
- अज्ञात लेखक = पेरिपल्स ऑफ द एरीथ्रीयन सी
  ↓
  इसमें भारतीय बन्दरगाहों की जानकारी मिलती है।

→ चन्द्रगुप्त मौर्य ने निकेटर को 500 हाथी दिए।

→ 298 BC में चन्द्रगुप्त ने श्रवणबेलागोला में सन्थारा / सल्लेखना द्वारा अपने प्राण त्याग दिए।

2. बिन्दुसार [298 - 273 BC]

→ यूनानी इतिहासकारों ने इसे अमित्रोचेडस (अमित्रघात) कहा है।

→ तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ इसको महान शासक बताते हैं।

→ तारानाथ के अनुसार इसने दक्षिण भारत पर अभियान किया था।

→ यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

→ यूनानी इतिहासकार एथिनीयस के अनुसार इसने यूनान के शासक से - मीठी शराब
(अंजीर) सूखे मेवे
दार्शनिक मँगवाए थे।

→ यूनानी शासक ने मीठी शराब एवं सूखे मेवे भेज दिए एवं दार्शनिक नहीं भेजा।

3. अशोक [273 - 232 BC]

→ राज्याभिषेक = 269 BC

* अशोक का अपने भाइयों के साथ चार वर्ष तक उत्तराधिकार संघर्ष चला।

→ माता = धीमा / सुभद्रांगी

→ पत्नी = ① देवी
   * पुत्र = महेन्द्र
   * पुत्री = संघमित्रा
   } इन्होंने श्रीलंका में बौद्ध धर्म को फैलाया।

   ② कोरुवकी / कारुवकी
   * पुत्र = तीवर
   * रानी के अभिलेख में इन दोनों का उल्लेख मिलता है।

   ③ पद्मावती
   * पुत्र = कुणाल

   ④ तिस्यरक्षा
   * इसने कुणाल की आँखे फुड़वा दी।
   * अशोक ने तिस्यरक्षा को जिन्दा जलवा दिया था।

→ अपने शासनकाल के 8th वर्ष में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया

* कलिंग की राजधानी तोसली थी।
* खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार कलिंग का राजा नन्दराज था।
* इस युद्ध में 1 लाख लोग मारे गए एवं 1.50 लाख लोगों को युद्धबन्दी बनाया गया।
* इस युद्ध के पश्चात् अशोक ने युद्ध नीति / युद्ध घोष के स्थान पर धम्म नीति / धम्म घोष को अपनाया।

अशोक का धर्म - जयसिंह व हर्ष के दरबार में

→ कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक पहले भगवान शिव का भक्त था।

→ उसने श्रीनगर शहर बसाया एवं वहाँ शिव मन्दिर का निर्माण करवाया। (कल्हण ने)

→ अशोक ने नेपाल में ललितपाटन एवं उसकी पुत्री चारुमती ने देवीपाटन शहर बसाया। (कल्हण ने)

→ दीपवंश एवं महावंश के अनुसार सुसीम के पुत्र निग्रोध ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

→ अशोक मोग्गलीपुत तिस्स के कारण बौद्ध धर्म से प्रभावित हुआ था।

☆ दीपवंश व महावंश = सिंहल साहित्य

→ दिव्यावदान (पुस्तक) एवं चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार - उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

→ अशोक ने अपने शासन के 10th वर्ष में बोधगया एवं 20th वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की।

→ भाब्रू अभिलेख से अशोक के बौद्ध होने की जानकारी मिलती है।

अशोक का धम्म -

→ यह अशोक की आचार संहिता थी।

→ इसका बौद्ध धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

→ इसमें माता-पिता की सेवा, अतिथि का सत्कार, सबका कल्याण जैसी शिक्षाएँ हैं।

→ अशोक ने धम्म यात्राओं का आयोजन करवाया।

* इसमें स्वर्ग की ~~झाख~~ झाँकियाँ निकाली जाती थी।

→ अशोक ने धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु अभिलेख लिखवाए एवं धम्म महामात्य की नियुक्ति की।

अशोक के लेख -

- लेख
  - शिलालेख
    - वृहत्
    - लघु
  - स्तम्भ लेख
    - वृहत्
    - लघु
  - गुहालेख

वृहत् शिलालेख - इनकी (अभिलेखों) संख्या 14 है एवं 8 स्थानों से प्राप्त होते हैं।

1. शाहबाजगढ़ी } पेशावर (Pak.)
2. मानसेरा / मानसेहरा } पेशावर (Pak.)
3. कालसी - UTK.
4. जूनागढ़ (Gujarat)
5. सोपारा (MH)
6. धौली } Odisha
7. जौगड़ / जौगढ़ } Odisha
8. एर्रगुडी (Andhra Pradesh)

पृथक् कलिंग प्रज्ञापन - अशोक 13 वें अभिलेख में कलिंग आक्रमण की जानकारी देता है लेकिन धौली व जौगड़ में समस्त प्रजा को अपनी सन्तान के समान बताता है

लघु शिलालेख - इसमें अशोक की व्यक्तिगत जानकारियाँ मिलती हैं।

① मास्की
② गुर्जरा
③ उदेगोलम
④ नेट्टूर

} इनमें अशोक के नाम का उल्लेख मिलता है।

→ अन्य अभिलेखों में अशोक की उपाधि देवानामप्रिय / देवानामप्रियदर्शी का उल्लेख मिलता है।

⑤ मास्की

वृहत् स्तम्भ लेख - अभिलेखों की संख्या 7 है एवं यह 6 स्थानों से प्राप्त होते हैं।

① प्रयाग प्रशस्ति :- यह मूलरूप से कौशाम्बी में था

* अकबर ने इसे प्रयाग में स्थापित करवाया।

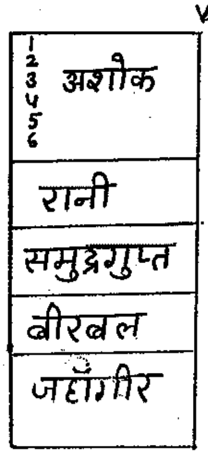

② टोपरा (Delhi) - यह टोपरा में स्थित था।

* फिरोज तुगलक ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया
* इस पर पूरे 7 अभिलेख मिलते हैं (एकमात्र)
* 7 वें अभिलेख में जैन धर्म एवं आजीवक धर्म की जानकारी मिलती है।

③ मेरठ - दिल्ली अभिलेख :- मूलरूप से मेरठ में था।

* फिरोज ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया

④ लौरिया अरराज
⑤ लौरिया नन्दनगढ़
⑥ रामपुरवा

} → Bihar

लघु स्तम्भ लेख -

* इनमें अशोक की राजनीतिक घोषणाएँ मिलती हैं।

① रुम्मिनदेई अभिलेख :- इसमें मौर्य काल की आर्थिक नीति (राजस्व नीति) की जानकारी मिलती है।

* अशोक ने भू-राजस्व घटाकर 1/6 से 1/8 कर दिया।

② सारनाथ अभिलेख
③ साँची अभिलेख
} इन अभिलेखों में अशोक बौद्ध संघ में फूट डालने वालों को चेतावनी देता है और कहता है - "जेल रहने लायक स्थान नहीं है एवं कैदी श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।"

गुहालेख -

→ अशोक ने कर्ण चौपड़ एवं सुदामा (आजीवक साधुओं हेतु) तथा विश्व झोंपड़ी गुफाओं का निर्माण करवाया।

☆ अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा (प्रादेशिक/स्थानीय) में लिखे गए हैं।

* अशोक के अभिलेखों की लिपियाँ :-

① ब्राह्मी लिपि
② खरोष्टी
③ अरामेइक
④ ग्रीक / यूनानी

1750 - टिफेन्थैलर ने अशोक के अभिलेखों की खोज की।

1837 - जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों को पढ़ा।

शर कुना (कन्धार अभिलेख) - [शर-ए-कुना]

→ यह अशोक का द्विभाषीय अभिलेख है।

→ ग्रीक व अरामेइक दो लिपियों में

☆ D.R. भण्डारकर ने अशोक के अभिलेखों के आधार पर अशोक का इतिहास लिखा है।

मौर्यकालीन कला (V.V.I.)

- मौर्यकालीन कला
  - राजकीय कला
    - महल
    - स्तूप
    - स्तम्भ
    - गुफा
  - लोक कला

① महल - /भवन :-

→ बुलन्दी बाग से लकड़ी के महलों के साक्ष्य मिलते हैं।

→ कुम्हार से राजप्रासाद (Royal Palace) के साक्ष्य मिलते हैं।

→ मेगस्थनीज एवं स्ट्रैबो पाटलीपुत्र के महलों व नगर नियोजन की प्रशंसा करते हैं।

→ ऐरियन पाटलीपुत्र के महलों को सुसा एवं एकवेतना के महलों से अधिक सुन्दर बताता है।

→ फाह्यान (चीनी यात्री) के अनुसार ऐसे महलों का निर्माण केवल देवता या दानव कर सकते हैं।

② स्तूप -

→ बौद्ध साहित्य के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया।

1. पीपरहवा स्तूप (U.P.)

→ प्राचीनतम स्तूप

2. सारनाथ स्तूप (UP)
3. सांची स्तूप (MP) → इसके तोरण सुन्दर हैं।

5. धर्मराजिका स्तूप -
(i) तक्षशिला
(ii) सारनाथ

→ ये चारों मौर्यकालीन स्तूप हैं।

स्तूप : एक परिचय

स्तूप का शाब्दिक अर्थ - ढ़ेर

स्तूप का पहला उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

स्तूप 4 प्रकार के होते हैं -

① शारीरिक स्तूप :- इसमें भगवान बुद्ध के अवशेषों को रखा गया है।
e.g. दाँत, हड्डी
संख्या = 8 + 1

② पारिभोगिक स्तूप :- भगवान बुद्ध से सम्बन्धित वस्तुएं
जैसे - बुद्ध का भिक्षापात्र, जूते

③ उद्देशिका स्तूप :- भगवान से सम्बन्धित स्थान व प्रतीक

④ पूजार्थक स्तूप :- आस्था के केन्द्र के रूप में

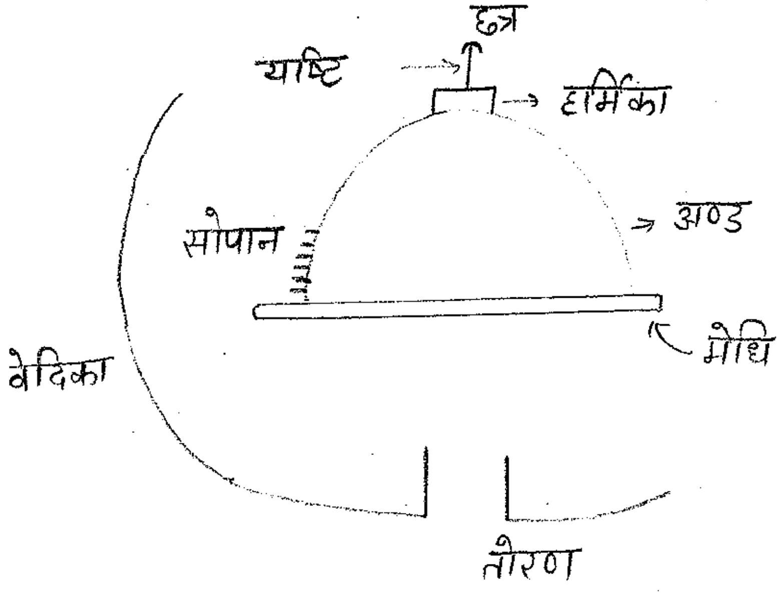

① अमरावती स्तूप - यह सफेद संगमरमर से निर्मित है।
* इसका निर्माण व्यापार संघ/श्रेणियों के प्रमुखों ने करवाया था।
* यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है।

Imp.
② धमेख स्तूप - यह गुप्तकालीन है।
* स्थिति = सारनाथ (UP)
* यह साधारण एवं ईंटों से निर्मित है।

③ भरहूत स्तूप - स्थिति = M.P.

③ स्तम्भ -
(i) सारनाथ स्तम्भ - 4 शेर मिलते हैं।

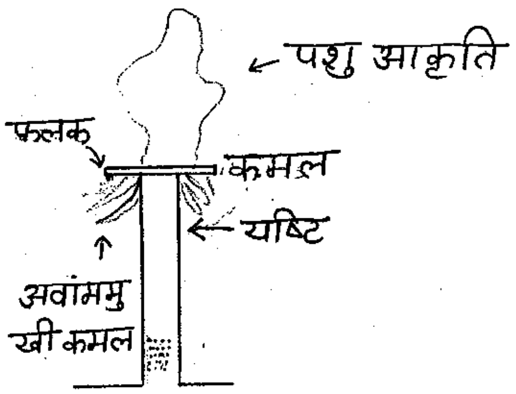

* यह भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।
* इसके फलक पर भगवान बुद्ध के प्रतीक मिलते हैं।
e.g. हाथी, सांड, घोड़ा, शेर
* इस पर 32 तीलियों वाला अशोकचक्र मिलता है।

* राष्ट्रीय ध्वज के अशोक चक्र में 24 तीलियाँ हैं।
* अशोक स्तम्भ सारनाथ संग्रहालय में है।

(ii) साँची स्तम्भ -
* 4 शेर
(iii) रुम्मिनदेई - घोड़ा
(iv) रामपुरवा -
→ बैल
→ शेर

(v) वैशाली - एक शेर

(vi) संकीसा - हाथी

④ <u>गुफाएँ</u> -

→ अशोक ने कर्णचौपड़, सुदामा और विश्व झोंपड़ी का निर्माण करवाया।

→ दशरथ ने (पोता) गोपिका गुफा का निर्माण करवाया।

✪ कुछ इतिहासकार अशोक के स्तम्भों को डेरियस के स्तम्भों की नकल मानते हैं।

* अशोक के स्तम्भ डेरियस के स्तम्भों की नकल नहीं है क्योंकि -

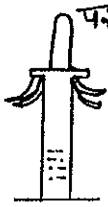

अशोक	डेरियस
① एकाश्मक पत्थर	① अलग - अलग पत्थरों को जोड़कर
② स्वतंत्र	② महल के हिस्से
③ अवानमुखी कमल	③ [सीधा] कमल
④ पशु आकृति	④ मानव आकृति
⑤ स्तम्भ सपाट हैं।	⑤ स्तम्भ नालीदार हैं।
⑥ लेखयुक्त हैं।	⑥ लेखविहीन हैं।

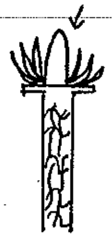

<u>लोककला</u> -

→ मौर्यकालीन समय में यक्ष एवं यक्षिणियों की मूर्तियाँ बनना आरम्भ हो गई थी।

→ मथुरा के पास परखम से एक यक्ष की मूर्ति मिलती है जिसे माणिभद्र कहा जाता है।

→ पटना की पास दीदारगंज से एक यक्षिणी की मूर्ति मिलती है जिसे चामारगृहिणी/चंवरगृहिणी कहा जाता है।

→ धौली से पत्थर को काटकर बनाया हुआ हाथी मिलता है।
→ बुलन्दीबाग से एक पहिया मिलता है।

Pre.
प्रशासनिक व्यवस्था

① सम्राट् -
→ राजतंत्रात्मक वंशानुगत शासन व्यवस्था थी।
→ चाणक्य का सप्तांग सिद्धान्त प्रसिद्ध था।
→ चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान की प्राचीनतम पुस्तक है।
→ राजा की सहायता हेतु 18 मंत्री होते थे जिन्हें तीर्थ कहा जाता था।
→ 3-5 प्रमुख मंत्रियों को मंत्रिण कहा जाता था।
e.g. पुरोहित
युवराज
सेनानी
→ अन्य प्रसिद्ध तीर्थ :-
(i) समाहर्ता → राजस्व अधिकारी
(ii) सन्निधाता → कोषाध्यक्ष
(iii) कर्मान्तिक → कल-कारखानों का प्रमुख
(iv) आन्तर्वंशिक → अङ्गरक्षक सेना का प्रमुख
(v) आटविक → वन विभाग का प्रमुख
(vi) दौवारिक → राजमहल की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला
(vii) प्रशास्ता → पत्राचार विभाग का प्रमुख
→ इन तीर्थों के नियंत्रण में 26 विभाग होते थे जिसके प्रमुख को अध्यक्ष कहा जाता था।

1. मुद्राध्यक्ष - पासपोर्ट विभाग का प्रमुख
2. लक्षणाध्यक्ष - मुद्रा विभाग का प्रमुख
3. सुराध्यक्ष - आबकारी विभाग का प्रमुख
4. सुनाध्यक्ष - बूचड़खाने का प्रमुख
5. लवणाध्यक्ष - नमक विभाग का प्रमुख
6. गणिकाध्यक्ष - वेश्यावृत्ति विभाग का प्रमुख
7. आखराध्यक्ष - खनिज विभाग का प्रमुख
8. पण्याध्यक्ष - व्यापार- वाणिज्य का प्रमुख
9. पौत्वाध्यक्ष - नाप- तौल विभाग का प्रमुख
10. कुप्याध्यक्ष - वन निरीक्षकों का प्रमुख

प्रान्तीय प्रशासन -

→ मौर्य साम्राज्य 5 प्रान्तों में विभाजित था।
→ प्रान्त को चक्र कहा जाता था।
→

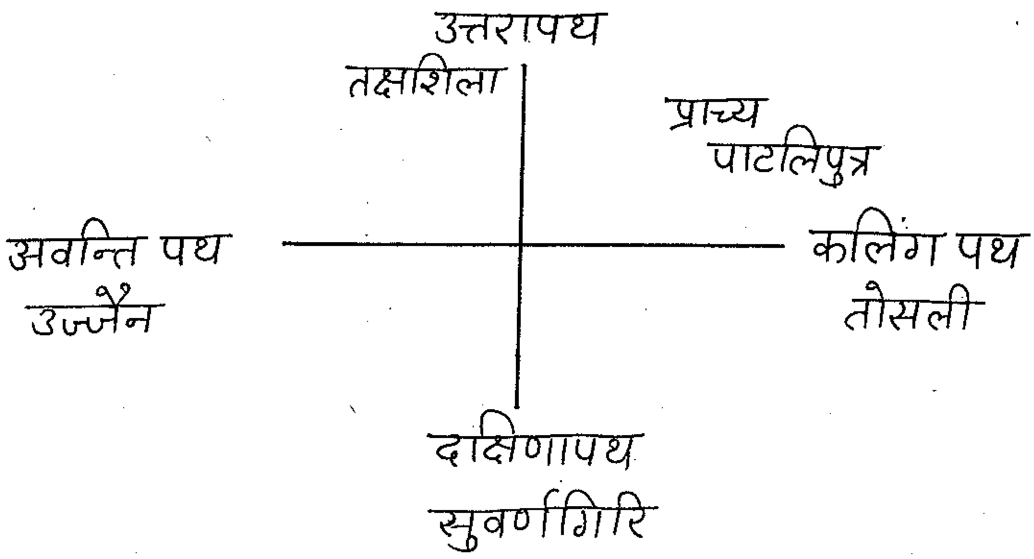

सैन्य प्रशासन -

→ मौर्य सेना को 6 भागों में विभाजित किया गया था जिनके नियंत्रण हेतु 6 समितियाँ थी।
→ प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

① जल
② घुड़सवारी
③ पैदल
④ रथ
⑤ हाथी
⑥ रसद आपूर्ति

गुप्तचर व्यवस्था -

→ गुप्तचर विभाग के प्रमुख को महामात्य सर्प कहा जाता था।

→ गुप्तचर को गूढ़ पुरुष कहा जाता था।

- संस्था → एक ही जगह रहकर गुप्तचरी करने वाले
- सञ्चार → घूम-घूम कर जासूसी करने वाले

न्यायिक प्रशासन -

न्यायालय

- दीवानी → धर्मस्थीय न्यायालय → न्यायाधीश = व्यावहारिक
- फौजदारी → कंटक शोधन न्यायालय → प्रदेष्टा

☆ राजुक - क्षेत्रीय न्यायाधीश/गणराज्य न्यायाधीश

सामाजिक स्थिति

→ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार

→ समाज 4 भागों में विभाजित था -

① ब्राह्मण
② क्षत्रिय
③ वैश्य
④ शूद्र

→ जाति व्यवस्था आरम्भ हो चुकी थी।

→ वर्णसंकर जातियाँ नगरों से बाहर रहती थी।

e.g. निषाद, स्वपाक, उग्र, अम्बष्ठ etc.

→ चाणक्य के अर्थशास्त्र में कुलीन महिलाओं को अनिष्कासिनी कहा गया है।

→ विधवा विवाह का प्रचलन कम हुआ।

→ वह विधवा महिलाएँ जो पुनः विवाह नहीं करती थीं उन्हें छन्दवासिनी कहा जाता था।

→ वेश्यावृत्ति राज्य के नियंत्रण में होती थी।

→ वेश्याओं को गणिका कहा जाता था।

→ स्वतंत्र वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं को रूपाजीवा कहा जाता था।

→ पुरुष कलाकारों को रंगोपजीवी कहा जाता था एवं महिला कलाकारों को रंगोपजीविनी कहा जाता था।

→ मेगस्थनीज के अनुसार भारत में दास प्रथा का प्रचलन नहीं था।

→ अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है।

→ अशोक ने युद्धबन्दियों को उत्पादन कार्यों में लगाया था।

→ मेगस्थनीज के अनुसार भारत में अकाल नहीं पड़ते।

→ शाहगौरा तथा महास्थान नामक अभिलेखों से अकाल राहत कार्यों की जानकारी मिलती है।

→ मेगस्थनीज ने शिव को डायोनिसस तथा कृष्ण को हेराक्लीज कहा है।

→ उसके अनुसार भारतीय देवताओं की मूर्तियाँ बनाते थे।

→ उसके अनुसार भारतीयों को लिखना नहीं आता था।

→ तलाक को मोक्ष कहते थे।

आर्थिक स्थिति

→ कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी।

→ अदेवमातृक - बिना सिंचाई के साधनों के अच्छी फसल पैदा करने वाली भूमि

→ सीता - राजकीय भूमि
* इस भूमि से 1/2 कर वसूला जाता था।

→ भाग - भू-राजस्व कर जो 1/6 था।
* यूनानी इतिहासकारों के अनुसार 1/4 था।

→ सेतुबन्द - यूनानी इतिहासकारों के अनुसार सिंचाई कर जो 1/5 से 1/3 था।

→ बेगार प्रथा को विष्ट / विष्टी कहा जाता था।

→ उद्योग - धन्धे विकसित अवस्था में थे एवं राज्य के नियंत्रण में थे।

→ सूती वस्त्र उद्योग प्रमुख उद्योग था।

→ अर्थशास्त्र में कुम्हार का उल्लेख नहीं मिलता।

→ मुद्रा प्रणाली का आरम्भ हो चुका था।

सोने का सिक्का = सुवर्ण

चाँदी का सिक्का = काषार्पण / धरण / पण

ताँबे का सिक्का = माषक / काकनी

→ यह सिक्के आहत / पंचमार्क सिक्के थे।
Punchmark

← मौर्योत्तर काल →
[185 BC - 319 AD]

1. शुंग वंश
2. कण्व वंश
3. सातवाहन वंश
4. इण्डो - ग्रीक
5. शाक
6. कुषाण
7. संगम काल - चेर वंश
   चोल वंश
   पाण्डय वंश

शुंग वंश [185 - 075 BC]

→ बाणभट्ट की हर्षचरित के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने अन्तिम मौर्य शासक बृहदर्थ की हत्या कर दी।

1. पुष्यमित्र शुंग -

→ बौद्ध साहित्य में पुष्यमित्र को बौद्ध धर्म का दुश्मन बताया गया है।

→ बौद्ध साहित्य के अनुसार पुष्यमित्र ने 84000 स्तूपों को तुड़वा दिया एवं पाटलीपुत्र के कुक्टारा/कुक्टाराम विहार को तोड़ने के असफल प्रयास किया।

→ इसने दो अश्वमेध यज्ञों का आयोजन करवाया।

→ अश्वमेध यज्ञों के पुरोहित = पतंजलि

☆ पतंजलि की पुस्तकें -

(i) योगदर्शन

(ii) योगसूत्र

(iii) महाभाष्य (पाणिनी के अष्टाध्यायी पर टीका)

→ अश्वमेध यज्ञ की जानकारी अयोध्या अभिलेख से मिलती है एवं कालिदास जी की मालविकाग्निमित्र से मिलती है।

→ शुंग वंश के समय इण्डो-ग्रीक (यवनों) ने भारत पर आक्रमण किए

* इस आक्रमण की जानकारी -

(i) कालिदास की मालविकाग्निमित्र

(ii) पतंजलि का महाभाष्य

(iii) गार्गी संहिता से मिलती है।

* गार्गी संहिता :- विषय = ज्योतिष

---

2. भागभद्र

→ इस वंश का 9th शासक

Imp. → इसके दरबार में यूनानी दूत हेलियोडोरस आया था।

(*) उसने भागवत धर्म स्वीकार कर लिया।

(*) उसने विदिशा के बेस-नगर में गरुड़ स्तम्भ स्थापित करवाया।

3. देवभूति -

→ इस वंश का अन्तिम शासक

→ वासुदेव कण्व ने इसकी हत्या कर दी।

* इस वंश की राजधानी विदिशा थी।

कण्व वंश [75 BC - 30 BC]

संस्थापक = वासुदेव कण्व

सुशर्मा = अन्तिम शासक

सातवाहन वंश ~ लगभग 300 वर्ष तक

संस्थापक = सिमुक

शातकर्णी I -

→ इस वंश का पहला प्रसिद्ध शासक

→ इसकी जानकारी नागणिका/नागनिका के नानाघाट अभिलेख से मिलती है।

हाल -

→ इस वंश 17th शासक

→ यह विद्वान शासक था।

→ पुस्तक = गाथा सप्तशती (700 प्रेम कहानियाँ)

→ दरबारी विद्वान :-

(i) सर्ववर्मन ⇒ कातन्त्र
  * विषय = व्याकरण

(ii) गुणाढ्य ⇒ वृहत्कथा

* गुणाढ्य की वृहत्कथा पर क्षेमेन्द्र ने वृहत्कथा मंजरी तथा सोमदेव ने कथा-चरित सागर की रचना की

→ हाल के सेनापति विजयालय ने श्रीलंका पर आक्रमण किया एवं हाल ने श्रीलंका की राजकुमारी लीलावती से विवाह कर लिया।

गौतमी पुत्र शातकर्णी

→ इस वंश का 23 वाँ एवं सबसे महान् शासक

→ उपाधियाँ -

① अद्वितीय ब्राह्मण

② आगमन निलय

③ वेणुकटक

④ त्रिसमुद्रतोयपितावाहन

☆ इसने वैदिक मार्ग एवं वर्ण व्यवस्था को पुनः स्थापित किया।

☆ इसके घोड़े तीन समुद्र का पानी पीते थे।

→ इसने शक शासक नहपान को पराजित किया एवं उसके सिक्कों पर अपना नाम लिखवाया।

→ इसने नासिक बौद्ध संघ को → अजकालकिय गाँव एवं कार्ले बौद्ध संघ को → करजक गाँव भेंट दिए।

→ इसने वेणुकटक नामक शहर बसाया।

वशिष्ठी पुत्र पुलमावी -

→ इस वंश का 24 वाँ शासक

→ इसे पुराणों में पुलोमा कहा गया है।

→ प्रथम शासक जिसके अभिलेख आंध्र प्रदेश से मिलते हैं।

→ अभिलेखों में इसे दक्षिणापथेश्वर कहा गया है।

→ शक शासक रुद्रदामन से दो बार पराजित हुआ।

→ इसने रुद्रदामन की पुत्री से विवाह किया।

→ इसने नवनगर नामक शहर बसाया।

यज्ञ श्री शातकर्णी -

→ इस वंश का अन्तिम प्रसिद्ध शासक

→ इसके सिक्कों पर जहाज के चित्र मिलते हैं।

→ सातवाहन वंश की विशेषताएँ -

① मातृसत्तात्मक समाज (नाम के आगे माता का गोत्र)

② प्राकृत भाषा का प्रचलन

③ पुराणों में इन्हें आन्ध्र भृत्य कहा गया है।

④ सीसे / पोटीन के सिक्के चलाए।

⑤ सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमि का अनुदान दिया (सामन्ती प्रथा का आरम्भ)

⑥ राजधानी = प्रतिष्ठान (पैठन)

इण्डो - ग्रीक

प्राचीन शाखा

① डेमिट्रीयस (संस्थापक) — ① युक्रेटाइडस (संस्थापक)

साकल (श्यालकोट) ← राजधानी → तक्षशिला

② मेनांडर (मिलिन्द)

→ नागसेन बौद्ध भिक्षु के साथ वार्तालाप

→ पुस्तक = मिलिन्दपन्हो

* विषय = बौद्ध दर्शन

② एंटियोलकिडास

* अपना दूत हेलियोडोरस भागभद्र के दरबार में भेजा।

<u>हर्मियस</u> - अन्तिम इण्डो - ग्रीक शासक

<u>इण्डो-ग्रीक शासकों का योगदान</u> -

① लेख युक्त सोने के सिक्के

* इण्टो-ग्रीक ने सोने के सिक्के चलाए।

② गार्गी संहिता के अनुसार भारत ज्योतिष शास्त्र के लिए यूनान का ऋणी रहेगा।

④ सप्ताह का प्रचलन आरम्भ हुआ।

⑤ भारतीय नाटकों पर प्रभाव पड़ा।

* रंगमंच के पर्दे को यवनिका कहा जाता है।

⑥ यूनानी भारतीय मसालों से परिचित हुए।

* काली मिर्च को यवनप्रिया कहा जाता था।

शक

→ शक मध्य एशिया की बर्बर जाति थी ।

→ यू-ची कबीले ने इन्हें पराजित किया ।

→ चीनी साहित्य में शकों को सई / सईवांग कहा जाता है।

→ भारतीय साहित्य में इन्हें सिथीयन कहा जाता है।

→ डेरियस के नक्श ए रुस्तम अभिलेख में शकों का उल्लेख मिलता है।

→ शकों के भारत में केन्द्र -

① तक्षशिला

② मथुरा

③ नासिक

④ उज्जैन

→ सबसे प्रसिद्ध शासक = रुद्रदामक

* इसने वशिष्ठी पुत्र पुलमावी को 2 बार पराजित किया ।

* जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार इसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया ।

* जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत भाषा का प्रथम बड़ा अभिलेख है।

→ शकों ने चाँदी के सिक्के बड़ी मात्रा में चलाए।

☆ चाँदी के सिक्के शकों की विशेषता थी ।

रुद्रसिंह III - अन्तिम शक शासक

कुषाण

→ यह मध्य एशिया के यू-ची कबीले से थे।

→ इनकी शाखा कुई शुआंग थी।

कुजुल कडफिसस - संस्थापक

→ इसे प्रथम कडफिसस भी कहा जाता है।

विम कडफिसस -

→ इसे दूसरा कडफिसस कहा जाता है।

→ यह भगवान शिव का अनुयायी था।

→ उपाधि = महेश्वर

→ इसके सिक्कों पर त्रिशूल, नन्दी, डमरू के चित्र मिलते हैं।

कनिष्क -

→ इस वंश का सबसे महान् शासक

→ राज्याभिषेक = 78 AD

→ शक संवत् आरम्भ हुआ।

→ राजधानियाँ -

① पुरुषपुर / पेशावर

② मथुरा

→ कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार इसने कश्मीर पर आक्रमण किया एवं वहाँ कनिष्कपुर नामक शहर बसाया।

→ इसने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया।

→ उसे पाटलीपुत्र से बुद्ध का भिक्षापात्र
अनोखा मुर्गा
एवं अश्वघोष मिले।

☆ अश्वघोष की पुस्तकें -

(i) बुद्ध चरित :- इसे बौद्ध धर्म का एनसाइक्लोपीडिया कहा जाता है।

(ii) सारिपुत्र प्रकरण :-

(iii) सौन्धरानन्द

(iv) सूत्रालंकार

→ नागार्जुन एवं चरक (↗ चरकसंहिता) इसके दरबार में थे।

↓ पुस्तक = माध्यमिक कार्यिका

→ सुश्रुत इसके समकालीन थे।

* पुस्तक = सुश्रुत संहिता

* सुश्रुत शल्य चिकित्सक थे।

→ कनिष्क ने मध्य एशिया पर अधिकार कर लिया।

→ भारत का रेशम मार्ग पर अधिकार हो गया।

* व्यापार - वाणिज्य की दृष्टि से मौर्योत्तर काल भारत का स्वर्णकाल था।

→ कनिष्क ने पान्चाओं के नेतृत्व वाली चीनी सेना को पराजित किया।

→ इसके सैनिकों ने इसकी हत्या कर दी।

→ कनिष्क महायान शाखा का अनुयायी था।

→ बौद्ध संगीती का आयोजन

हुविष्क -

→ भगवान विष्णु का अनुयायी

कुषाणों की विशेषताएँ :-

① कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के चलाए।

② कुषाण शासक मन्दिरों में अपनी मूर्तियाँ स्थापित करवाते थे।

③ सिले हुए कपड़े का प्रचलन

④ चपड़े के जूतों का प्रयोग

⑤ घोड़े के लगाम लगाना

⑥ कुषाण शासक देवपुत्र, देवप्रिय उपाधियाँ धारण करते थे।

मौर्योत्तरकालीन व्यापार-वाणिज्य

→ व्यापार-वाणिज्य का स्वर्णकाल था।

→ कारण -

① रेशम मार्ग पर नियंत्रण

② रोमन साम्राज्य अपने चरम पर था। भारत रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार करता था।

③ मुद्रा प्रणाली विकसित हुई।

④ दक्षिण भारत से समुद्री व्यापार होता था।

⑤ दक्षिण भारत में संगम काल चल रहा था।

⑥ अरिकामेडु (पांडिचेरी) से रोमन सिक्के प्राप्त होते हैं।

⑦ 46 AD : हिप्पालस ने व्यापारिक पवनों की खोज की।

V.V.I. मौर्योत्तरकालीन कला mains

→ मौर्योत्तर काल में विभिन्न मूर्तिकला शैलियों का विकास हुआ।

→ मूर्तियों का निर्माण सिन्धु घाटी सभ्यता में आरम्भ हो गया था लेकिन उनमें सुन्दरता एवं तकनीक का अभाव था।

→ मौर्योत्तर काल में रोमन, ग्रीक, पारसी प्रभाव बढ़ा।

→ कुषाण, सातवाहन शासकों ने मूर्तिकला को संरक्षण दिया।

→ तीन शैलियाँ विकसित हुई -

① गान्धार शैली ② मथुरा ③

① गान्धार शैली -

→ इस मूर्तिकला शैली को कुषाण शासकों ने संरक्षण प्रदान किया।

→ इस शैली पर ग्रीक, रोमन, फारसी प्रभाव दिखाई देता है।

→ इसे विदेशी शैली या ग्रीक शैली भी कहा जाता है।

→ इस शैली में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ अधिक बनी हैं।

→ भगवान बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियाँ इसी शैली में निर्मित हैं।

→ भगवान बुद्ध को यूनानी देवता अपोलो के समान बताया गया है।

→ मूर्ति की शारीरिक संरचना पर विशेष बल दिया है। (दिखाया)

e.g. भगवान बुद्ध को बलिष्ठ व घुँघराले बालों में बताया गया है।

→ बुद्ध की ज्यादातर मूर्तियाँ खड़ी अवस्था में हैं।

→ यह यथार्थवादी एवं भौतिकवादी मूर्तिकला शैली है।

→ मूर्तियों पर कपड़े का अङ्कन किया गया है।

→ प्रमुख केन्द्र :-

(i) तक्षशिला

(ii) बामियान

(iii) बीमरान

② मथुरा मूर्तिकला शैली -

→ यह स्वदेशी मूर्तिकला शैली है।

→ इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था लेकिन वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।

→ इसमें बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ बनी।

→ भगवान बुद्ध की प्रथम मूर्ति मथुरा शैली में निर्मित है।

→ यह आध्यात्मिक मूर्तिकला शैली है।

→ इसमें भगवान बुद्ध को दुबला - पतला दिखाया है लेकिन चेहरे पर [चमक]

अत्यधिक तेज दिखाया गया है।

→ अधिकतर मूर्तियाँ पद्मासन अवस्था में है।

→ इस शैली में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।

→ प्रमुख केन्द्र :-

(i) मथुरा

(ii) सारनाथ

(iii) साँची

③ अमरावती शैली -

→ इस शैली को राजकीय संरक्षण प्राप्त था लेकिन वास्तविक विकास लोककला के रूप में हुआ।

→ इसमें बौद्ध, हिन्दू, जैन एवं गैर-धार्मिक मूर्तियों का निर्माण हुआ।

☆ सातवाहन शासकों ने संरक्षण दिया था।

→ इस शैली में संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

→ प्रमुख केन्द्र :-

(i) अमरावती

(ii) घंटशाल

(iii) नागार्जुन कोंडा

गुप्तकाल [319 - 550 AD]

श्रीगुप्त - [240 - 280 AD]

→ प्रभावती गुप्त के पूना ताम्रपत्र अभिलेख में इसका उल्लेख मिलता है।

→ चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार इसने पाटलिपुत्र में मन्दिर का निर्माण करवाया।

→ इसने महाराज की उपाधि धारण की।

☆ महाराज उस समय सामन्तों की उपाधि थी।

घटोत्कच [280 - 319 AD]

चन्द्रगुप्त I [319 - 335 AD]

→ गुप्तकाल का वास्तविक संस्थापक

→ इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

→ इसने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी / कुमारी देवी से विवाह किया।

→ इसने राजा-रानी प्रकार के सिक्के, विवाह प्रकार के सिक्के, श्री सिक्के चलाए।

→ इसने अपने पुत्र समुद्रगुप्त के पक्ष में सिंहासन छोड़ दिया।

समुद्रगुप्त [335 - 375 AD]

→ इस वंश का सबसे महान शासक

→ उपाधि = लिच्छवी दौहित्र
धरणिबन्ध

→ इसकी जानकारी हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति से मिलती है।

→ हरिषेण समुद्रगुप्त का महासन्धिविग्रहक था।

→ यह प्रशस्ति चम्पू शैली में लिखी गई है।

→ इसने उत्तर भारत के नौ शासकों को पराजित किया।

→ उत्तर भारत में समुद्रगुप्त ने प्रसभोद्धरण (समूल नाश करना) की नीति को अपनाया।

→ इसने दक्षिण भारत के 12 शासकों को पराजित किया एवं उनके लिए ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति को अपनाया (अर्थात् कर लेकर छोड़ दिया था)

→ इसने शकों, कुषाणों, इण्डो-ग्रीक, कामरूप प्रदेश (असम), नेपाल एवं राजस्थान व हरियाणा के गणराज्य को पराजित किया।

→ इसने 6 प्रकार के सिक्के चलाए -

① गरुड़ सिक्के - सबसे प्रसिद्ध

②
* गुप्त शासकों ने भागवत धर्म को संरक्षण दिया।
* गरुड़ गुप्त शासकों का प्रतीक था।

② अश्वमेध यज्ञ सिक्के :-

* प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के अश्वमेध यज्ञ की जानकारी नहीं मिलती है।

③ वीणा वादन सिक्के -

* समुद्रगुप्त वीणा बजाता था।

④ धनुर्धर सिक्के -

⑤ परशु सिक्के

⑥ व्याघ्रहन्ता

→ इतिहासकार स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है।

रामगुप्त -

→ विशाखदत्त की देवीचन्द्रगुप्तम् के अनुसार रामगुप्त की पत्नी का नाम ध्रुवस्वामिनी था।

→ शक शासक रुद्रसिंह III ने रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी की माँग की।

→ चन्द्रगुप्त II ने रुद्रसिंह III की हत्या कर दी एवं ध्रुवस्वामिनी से विवाह किया और शासक बन गया।

चन्द्रगुप्त II [375- 414 AD]

→ उपाधियाँ = विक्रमादित्य
परमेश्वर

→ अन्तिम शक शासक रुद्रसिंह III की हत्या की एवं 'शकारि' उपाधि धारण की।

→ अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक (MH) शासक रुद्रसेन II से किया।

→ रुद्रसेन II की मृत्यु के पश्चात् शासन प्रभावती गुप्त के पास आ गया

→ महरौली के लौह स्तम्भ अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त II ने बाहलिकों को पराजित किया।

☆ लौह स्तम्भ का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त II से है।

→ इसके दरबार में नवरत्न थे -

① कालिदास
② वराहमिहिर
③ क्षपणक
④ शंकु
⑤ वररूची

(6) धनवन्तरि
(7) अमरसिंह
(8) वेताल भट्ट / भट्टी
(9) घटकर्पर

→ इसके समय चीनी यात्री फाह्यान भारत आया।
→ फाह्यान चन्द्रगुप्त के नाम का उल्लेख नहीं करता है।
→ फाह्यान स्थल मार्ग से आया था।
* वह जहाज द्वारा ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से वापस चीन लौटा था।
* फाह्यान बौद्ध धर्म की जानकारी के लिए भारत आया।
* फाह्यान की पुस्तक = फो-क्वो-की

कुमारगुप्त [414-454 AD]
→ गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के मिलते हैं।
→ गुप्त शासकों में सर्वाधिक सोने के सिक्के कुमारगुप्त के मिलते हैं।
→ भरतपुर के पास बयाना से सिक्कों का ढेर मिलता है।

सिक्के :-
* आरम्भिक सिक्के = आहत / पंचमार्क
* ग्रीकों ने सोने के लेखयुक्त सिक्के चलाए।
* कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के चलाए।
* सातवाहन शासकों ने सीसे / पोटीन
* शकों की विशेषता = चाँदी के सिक्के
* सर्वाधिक सोने के सिक्के गुप्तों ने चलाए।

→ कुमारगुप्त कार्तिकेय का अनुयायी था।

→ कुमारगुप्त ने मयूर शैली के सिक्के चलाए।

→ ☆ चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार शक्रादित्य ने नालन्दा विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया।

→ कुमारगुप्त की उपाधि = शक्रादित्य
महेन्द्रादित्य

→ इसने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया।

→ भीतरी अभिलेख के अनुसार स्कन्दगुप्त ने पुष्यमित्रों को पराजित किया।

स्कन्दगुप्त [

→ जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार इसने हूणों को पराजित किया।

→ जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।

हूण - हूण मध्य एशिया के थे।
हूण अत्यधिक बर्बर थे।
हूणों ने 'हर हर महादेव' का नारा प्रसिद्ध किया।

तिगिन
↓
तोरमाण
↓
मिहिरकुल :- यह भगवान शिव का अनुयायी था।
☆ इसने कोटा के पास बाडोली में शिव मन्दिर का निर्माण करवाया।

mains

सुदर्शन झील -

* चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण
* अशोक ने पुनर्निमाण
* रुद्रदामन ,, ,,
* स्कन्दगुप्त ,, ,,

सौराष्ट्र का गवर्नर

पुष्यगुप्त
तुशास्फ
सुविशाख
} जूनागढ़ (संस्कृत)

पर्णदत्त का पुत्र चक्रपालित - जूनागढ़

• मौर्यकालीन शासकों ने जनकल्याणकारी कार्यों के तहत सुदर्शन झील का निर्माण एवं पुनर्निमाण करवाया तथा सिंचाई व्यवस्था को विकसित किया।

• अशोक ने नहरों का निर्माण करवाया था।

mains

गुप्तकालीन साहित्य

धार्मिक साहित्य -

① रामायण : रचनाकार = वाल्मीकि

* आरम्भ में इसमें 6000 श्लोक थे।
* बाद में 24000 हो गए।
* रामायण को 'चुतुर्विंश सहस्त्र संहिता' कहा जाता है।
* रामायण के अध्याय को काण्ड कहा जाता है।
* रामायण में सात काण्ड हैं।

① बालकाण्ड
② अयोध्याकाण्ड
③ अरण्यकाण्ड
④ किष्किन्धा काण्ड
⑤ सुन्दरकाण्ड
⑥ लंकाकाण्ड / युद्धकाण्ड
⑦ उत्तर काण्ड

② महाभारत -

* रचनाकार = वेदव्यास
* धार्मिक मान्यतानुसार इसे भगवान गणेश ने लिखा था।
* महाभारत के अध्याय को पर्व कहते हैं।
* महाभारत में 18 पर्व हैं।
* महाभारत का छठाँ पर्व भीष्म पर्व है। मृत्युंजय उपन्यास
* भीष्म पर्व में भगवद्गीता है।
* भगवद्गीता में 18 अध्याय हैं।
* आरम्भ में 8000 श्लोक = जयसंहिता
  24000 श्लोक = भारत संहिता
  1 लाख श्लोक = महाभारत / शतसहस्त्र संहिता

गैर- धार्मिक साहित्य -

① कालिदास जी -

* दो काव्य -

(i) रघुवंश
(ii) कुमारसम्भव - कार्तिकेय की कहानी

* दो अर्द्ध काव्य -

(i) ~~1व~~ ऋतुसंहार } विरह वेदना
(ii) मेघदूत } विरह वेदना

* नाटक -

(i) विक्रमोर्वशीय → राजकुमार पुरुरवा व उर्वशी की कहानी
(ii) मालविकाग्निमित्र → शुंग राजकुमार अग्निमित्र एवं मालविका की कहानी
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् → राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला की कहानी

* कालिदास जी की अन्तिम एवं सर्वश्रेष्ठ रचना ≥
* प्रथम भारतीय पुस्तक जिसका यूरोपीय भाषा में अनुवाद हुआ।

② क्षेमेन्द्र -
* वृहत् कथा मञ्जरी

③ अमरसिंह - अमरकोष

④ चन्द्रगोमिन - चन्द्रगोमिन व्याकरण

⑤ वात्सयायन - कामसूत्र

⑥ कामन्दक - नीति सार

Imp.
⑦ शुद्रक - मृच्छकटिकम्
* मिट्टी की गाड़ी
* इसका नायक चारुदत्त ब्राह्मण था।
* प्रथम पुस्तक जिसमें आम आदमी को नायक बनाया गया था।
* चारुदत्त व्यापार करता है।

⑧ माघ - शिशुपाल वध
* यह कवि भीनमाल के थे।

⑨ वत्स भट्टी - रावण वध

⑩ विष्णु शर्मा - पञ्चतंत्र

⑪ भास - 1. स्वप्नवासवदत्ता
* अवन्ति के शासक प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता एवं वत्स के शासक उदयन की कहानी
* यह भारत का प्रथम नाटक

2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण

3. चारुदत्तम्

mains मूर्तिकला

→ गुप्तकालीन मूर्तियाँ मौर्योत्तरकालीन मूर्तियों जितनी सुन्दर नहीं है लेकिन उनमें नग्नता का अभाव है।

→ इस समय अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति
हरिहर की मूर्ति
मकरवाहिनी गङ्गा
कुर्मवाहिनी यमुना
त्रिदेव की मूर्तियाँ बनना आरम्भ हुई थीं।

→ सुल्तानपुर गंज (U.P.) से भगवान बुद्ध की विशाल (8 ft) धातु की मूर्ति प्राप्त होती है।

→ साँची, सारनाथ से पाषाण की मूर्तियाँ मिलती हैं।

→ गुप्तकालीन मन्दिरों से दशावतार एवं अप्सराओं की मूर्तियाँ मिलती हैं।

mains. मन्दिर स्थापत्य कला

→ उत्तर भारत में मन्दिर स्थापत्य कला का आरम्भ गुप्तकाल में हुआ।

→ आरम्भिक मन्दिर चबूतरेनुमा होते थे।

→ चबूतरे के 3 ओर सीढ़ियाँ होती थीं।

→ चबूतरे पर गर्भगृह का निर्माण आरम्भ हुआ।

→ कालान्तर में गर्भगृह पर शिखर बनाया जाने लगा।

→ गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा / परिक्रमा पथ होता था।

→ आरम्भिक मन्दिर पञ्चायतन शैली में बनते थे।

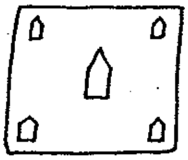

→ मन्दिर स्थापत्य कला का प्रथम सर्वश्रेष्ठ उदाहरण देवगढ़ (UP) का दशावतार मन्दिर है।

→ अन्य प्रसिद्ध मन्दिर -

① भूमरा का शिव मन्दिर

② तीगवा का विष्णु मन्दिर

③ सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर

④ नचना कुठार का पार्वती मन्दिर

⑤ भीतरी गाँव का ईंटों का मन्दिर (विष्णु मन्दिर)

गुप्तकालीन चित्रकला

→ अजन्ता (औरंगाबाद, MH) एवं बाघ (MP) की गुफाओं से गुप्तकालीन चित्र मिलते हैं।

→ यहाँ से फ्रेस्को एवं टेम्पेरा चित्र मिलते हैं।

→ इनमें प्राकृतिक रङ्गों का अत्यधिक सुन्दरता से मिश्रण एवं प्रयोग किया गया है।

→ अजन्ता की गुफाएँ -

* अजन्ता से 29 गुफाएँ मिलती हैं [NCERT]
* ASI के अनुसार 30 गुफाएँ हैं।
* गुफा संख्या - 1, 2, 9, 10, 16, 17 के चित्र सुरक्षित मिलते हैं।
* अजन्ता की गुफाओं की खोज मद्रास प्रेजीडेंसी के सैनिकों ने की थी।
* गुफा संख्या - 1, 2 :- 6^{th} व 7^{th} शताब्दी
* गुफा संख्या - 1 में चालुक्य शासक पुलकेसिन II को फारस के दूत का स्वागत करते हुए का चित्र मिलता है।

* गुफा संख्या - 9, 10 :- सातवाहन शासकों के समय की (Oldest)
* गुफा संख्या - 16, 17 :- निर्माण वाकाटक शासक हरिषेण के मंत्री वराहदेव ने करवाया।

* गुफा संख्या - 16 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र मिलता है जो आनन्द की पत्नी सौन्धरा का है।
* गुफा संख्या - 17 को चित्रशाला कहा जाता है।
* गुफा संख्या - 17 से महाभिनिष्क्रमण तथा महापरिनिर्वाण, माता एवं शिशु का चित्र (यशोधरा एवं राहुल)

→ बाघ की गुफाएँ -
* बाघ की गुफाओं की खोज डेंजर फील्ड ने की थी।
* इन गुफाओं में बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म एवं जैन धर्म से सम्बन्धित चित्र मिलते हैं।
* बाघ में 9 गुफाएँ हैं।

mains. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

→ इस दृष्टिकोण से गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था।
→ महरौली (Delhi) से चन्द्रगुप्त II का लौह स्तम्भ मिलता है जो गुप्तकालीन रसायनविद्या का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

→ आर्यभट्ट -
* सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने सौरमण्डल का केन्द्र सूर्य है एवं पृथ्वी उसका ग्रह है।
* उसने बताया कि चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है एवं चंद्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है।

* उसने सूर्यग्रहण एवं चंद्रग्रहण के कारणों को बताया।
* उसने π का मान दिया।
* उसने पृथ्वी की त्रिज्या बताई जो वर्तमान में भी सटीक है।
* उसने त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालने का सूत्र दिया।
* प्रथम व्यक्ति जिसने अपने नाम पर पुस्तक लिखी।
* पुस्तकों के नाम :-

(i) आर्यभट्टियम्

(ii) सूर्य सिद्धान्त - इसमें त्रिकोणमिति मिलती है।

(iii) दशगितीका सूत्र

→ वराहमिहिर -

* पुस्तकें - पंच सिद्धान्तिका
  वृहत् संहिता
  वृहत्जातक
  लघुजातक
* इसने कुण्डली पर कार्य किया।
* यह फलित ज्योतिष में विश्वास रखता था।

→ भास्कराचार्य I -

* इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तकों पर कार्य किया एवं आर्यभट्ट के सिद्धान्तों को सही माना।
* पुस्तकें - वृहत्भास्कर्य
  लघुभास्कर्य

→ ब्रह्मगुप्त -

* यह भीनमाल के थे।

* पुस्तकें - ब्रह्म स्फुट सिद्धान्त
  खण्डन खाद्य

→ भास्कराचार्य II -

* यह 12 वीं शताब्दी में थे।

* यह गणितज्ञ थे।

* पुस्तक - सिद्धान्त शिरोमणि
    • इसके चार संस्करण (volume) है -
    (i) लीलावती :- लीलावती भास्कराचार्य की पुत्री थी।
    ⊙ वह स्वयं गणितज्ञ थी।
    (ii) गणिताध्ययन
    (iii) गोलाध्ययन
    (iv) बीजगणित

→ वाग्भट्ट -

* पुस्तक = अष्टांगहृदय (Content = आयुर्वेद)

→ पालकाप्य - हस्तिआयुर्वेद (हाथियों की चिकित्सा)

→ गुप्तकाल में नवनीतकम् (आयुर्वेद पर) नामक ग्रन्थ की रचना हुई।

V.V.I. 2marks, 10 marks

दर्शन

आस्तिक दर्शन (षड्दर्शन)

1. पूर्वमीमांसा
2. उत्तरमीमांसा
3. सांख्य
4. योग
5. न्याय
6. वैशेषिक

नास्तिक दर्शन

1. बौद्ध दर्शन
2. जैन दर्शन
3. चार्वाक दर्शन

आस्तिक दर्शन -

→ वे दर्शन जो वेदों को नित्य एवं प्रामाणिक मानते हैं।

→ इनकी संख्या 6 है।

नास्तिक दर्शन -

→ वे दर्शन जो वेदों को नित्य व प्रामाणिक नहीं मानते।

→ इनकी संख्या 3 है।

पूर्वमीमांसा -

→ प्रवर्तक = जैमिनि

→ प्रमुख आचार्य = कुमारिल भट्ट
प्रभाकर

→ यह अनीश्वरवादी दर्शन है (ईश्वर को नहीं मानते)

→ यह कर्मकाण्ड में विश्वास करते हैं।

→ यदि सही विधि द्वारा कर्म किए जाएँ तो उसका फल अवश्य मिलता है।

→ यह वेदों एवं ब्राह्मण साहित्यों पर आधारित है।

उत्तरमीमांसा -

→ प्रवर्तक = बादरायण

→ यह आरण्यक एवं उपनिषदों पर आधारित है।

→ इसमें रहस्यात्मक ज्ञान एवं दार्शनिक तत्वों पर बल दिया गया है।

→ प्रमुख आचार्य :- 1. शंकराचार्य

- अद्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया।
- शङ्कर निर्गुण, निराकार, निर्वचनीय ब्रह्म को मानते थे
- शंकर के अनुसार ब्रह्म सत्य एवं जगत मिथ्या है।
- शंकर ब्रह्म एवं जगत में सजातीय, विजातीय व स्वगत भेद को मानते नहीं / स्वीकार नहीं करते।
- माया के कारण हमें जगत का आभास होता है।
- शंकर के अनुसार ब्रह्म सच्चिदानन्द (सत् चित आनन्द) है।
  सच्चाईमें चेतना

2. रामानुजाचार्य -

* रामानुजाचार्य ने विशिष्ट अद्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया।
* रामानुजाचार्य ब्रह्म एवं जगत में सजातीय व विजातीय भेद को अस्वीकार करते हैं लेकिन स्वगत भेद को मानते हैं।
* इसीलिए उनके दर्शन को विशिष्ट अद्वैतवाद कहा जाता है।
* रामानुज ने भक्ति की अवधारणा पर बल दिया।

3. माध्वाचार्य - द्वैतवाद

4. निम्बार्काचार्य - द्वैत - अद्वैतवाद
5. वल्लभाचार्य - शुद्ध अद्वैतवाद

सांख्य -

→ साम् + ख्य = सम्यक् ज्ञान
→ प्रतिपादक = कपिलमुनि
→ यह द्वैतवादी दर्शन है।
→ पुरुष एवं प्रकृति को मानते हैं।
→ यह विकासवादी दर्शन है।
→ यह अनीश्वरवादी दर्शन है।
→ यह योग का जुड़वाँ दर्शन है [योग की ज्ञान मीमांसा को मानते हैं]

योग-

→ प्रतिपादक = पतञ्जलि
→ योग का शाब्दिक अर्थ = जोड़ना ।
→ पतञ्जलि के अनुसार चित्त वृत्ति का निरोध ही योग है।
→ गीता के अनुसार कर्म में कुशलता लाना ही योग है।
→ पतञ्जलि ने अष्टाङ्गिक पथ दिया -

① यम
② नियम
③ आसन
④ प्राणायाम
⑤ प्रत्याहार
⑥ धारणा
⑦ ध्यान
⑧ समाधि

→ यह सांख्य दर्शन का जुड़वाँ दर्शन है।

न्याय -

→ प्रतिपादक = गौतम ऋषि

→ इसे भारतीय दर्शन का तर्क शास्त्र कहा जाता है।

→ यह अपनी ज्ञान मीमांसा के लिए प्रसिद्ध है।

→ ज्ञान प्राप्ति के 4 साधन हैं -

① प्रत्यक्ष

② अनुमान

③ उपमान

④ शब्द

→ न्याय दर्शन ईश्वर के लिए प्रमाण देता है।

→ यह वैशेषिक दर्शन का जुड़वाँ दर्शन है।

वैशेषिक दर्शन -

→ प्रतिपादक = कणाद / उलुक

→ इसे औलुक्य दर्शन कहा जाता है।

→ परमाणुवाद का सिद्धान्त दिया।

चार्वाक -

→ प्रतिपादक = बृहस्पपि

→ बृहस्पति ने दानवों को दिग्भ्रमित करने हेतु इस दर्शन का प्रतिपादन किया।

→ इसे लोकायत दर्शन भी कहा जाता है।
→ यह ईश्वर को नहीं मानते ।
→ यह कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को नहीं मानते ।
→ यह आत्मा को नहीं मानते ।
→ आत्मा को पान के उदाहरण द्वारा समझाया गया है।
→ यह दो पुरुषार्थ अर्थ और काम को मानते हैं।
→ यह ४ तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु को मानते हैं [आकाश को नहीं मानते]
→ यह ज्ञान प्राप्ति का एक साधन प्रत्यक्ष को मानते हैं।
→ यह भौतिकवादी एवं सुखवादी दर्शन है।
→ यह 'खाओ, पिओ एवं विवाह करो' में विश्वास करते हैं।

Pre. गुप्तकालीन प्रशासन

→ राजतंत्रात्मक, वंशानुगत शासन व्यवस्था थी।
→ राजा महाराजाधिराज, परमेश्वर जैसी उपाधियाँ धारण करता था।
→ राजा सभी शक्तियों का केन्द्र होता था।
→ इस समय वेतन के रूप में भूमि अनुदान दिया जाने लगा जिससे सामन्तवाद का विकास हुआ एवं शक्तियों का विकेंद्रीकरण हुआ।
→ सम्राट् के प्रमुख मंत्री :-

① महासन्धिविग्रहक : युद्ध एवं शान्ति का मंत्री
② महादण्डनायक : न्यायाधीश
③ महाबलाधिकृत : सेनापति

④ दण्डपाशिक : प्रमुख पुलिस अधिकारी

⑤ महाअक्षपटलिक : अभिलेख एवं राजस्व अधिकारी

⑥ विनयस्थितिस्थापक : धार्मिक एवं नैतिक मामलों का प्रमुख

⑦ करणिक : बाबू

प्रान्तीय प्रशासन -

→ गुप्तकाल में प्रान्त को विषय / भूक्ति कहा जाता था।

↓
विथी (संभाग)
↓
पेठ (तहसील)
↓
ग्राम

कुछ इतिहासकारों के अनुसार
भूक्ति (राष्ट्र)
↓
विषय (राज्य)

आर्थिक स्थिति -

→ गुप्तकाल में विदेशी व्यापार में गिरावट आई। क्योंकि रोमन साम्राज्य का पतन हो गया।

→ चीन एवं पूर्वी देशों के साथ व्यापार होता था लेकिन ये व्यापार वस्तु विनिमय द्वारा होता है। क्योंकि हमें भारत से एक भी विदेशी मुद्रा नहीं मिलती।

→ फाह्यान ताम्रलिप्ति बन्दरगाह द्वारा श्रीलंका होते हुए चीन गया था।

→ फाह्यान के अनुसार भारत में कौड़ियों से व्यापार होता था।

→ गुप्तकालीन सोने के सिक्के बड़ी मात्रा में प्राप्त होते हैं।

* इनका प्रयोग उपहार, धन सञ्चय हेतु किया जाता था।

→ चाँदी एवं ताँबे के सिक्के के कम मात्रा में मिलते हैं।

→ घरेलु व्यापार होता था।

सामाजिक स्थिति

→ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार थे।

→ समाज 4 वर्णों में विभाजित था।

→ जाति प्रथा का प्रचलन था।

→ शूद्रों को वार्ता का अधिकार था।

→ अस्पृश्यता थी।

→ वर्णसङ्कर जातियाँ गाँव के बाहर रहती थी।

→ महिलाओं को शिक्षा का अधिकार कम था।

e.g. गुप्तकालीन साहित्य में महिलाएँ एवं शूद्र प्राकृत भाषा में संवाद करते हैं।

→ विधवा विवाह को बुरा माना जाने लगा।

→ बाल विवाह एवं सती प्रथा जैसी बुराइयाँ थीं।

→ सती प्रथा का पहला उल्लेख एरण अभिलेख से मिलता है। [510 AD]

→ एरण अभिलेख → 510 AD

* सेनापति गोपराज की पत्नी सती हुई थी।

→ पर्दा प्रथा का प्रचलन था।

→ इस समय आपद धर्म की अवधारणा प्रसिद्ध हुई।

* मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त ब्राह्मण था लेकिन वह व्यापार करता था।

* चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार सिन्ध, कच्छ एवं मालवा में शूद्रों का शासन था।

* इन्दौर ताम्रपत्र के अनुसार क्षत्रिय घोड़ों को व्यापार करते थे।
→ गुप्तकाल में कलिवर्ज्ये की अवधारणा विकसित हुई।
→ वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।
* वृद्ध वेश्याओं को कुट्टिनी कहा जाता था।

धार्मिक स्थिति

→ गुप्त शासकों ने भागवत धर्म को संरक्षण दिया लेकिन गुप्त शासक सहिष्णु थे।
* समुद्रगुप्त ने श्रीलंका के शासक मेघवर्मन को बोधगया में विहार बनाने की अनुमति प्रदान की।
→ चन्द्रगुप्त II का महासन्धिविग्रहक वीरसेन भगवान शिव का अनुयायी था।
* उसने उदयगिरि के शिव मन्दिर को बड़ा दान दिया।
→ गुप्तकाल में भागवत धर्म के साथ-साथ शैव धर्म, शाक्त धर्म, जैन, बौद्ध धर्मों का विकास हुआ।
→ इस काल में हरिहर की मूर्ति, अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति, कुर्मवाहिनी यमुना, मकरवाहिनी गङ्गा, त्रिदेव, एकमुखी शिवलिङ्ग, चतुर्मुखी शिवलिङ्ग की मूर्तियाँ बनना आरम्भ हुई।
→ षड्दर्शन का विकास भी इसी समय हुआ।

हर्षवर्धन [606-647 AD]

प्रभाकरवर्धन - यशोमति

↓ राज्यवर्धन
↓ हर्ष
↓ राज्यश्री → ग्रहवर्मा (कन्नौज)

→ राजधानी = थानेश्वर (HR)

→ वंश = पुष्यभूति वंश

→ प्रभाकरवर्धन ने राजस्थान पर आक्रमण किया था।

→ प्रभाकर ने अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह कन्नौज के शासक ग्रहवर्मा से करवा दिया।

→ प्रभाकर की बीमारी से आहत होकर उसकी पत्नी यशोमती ने आत्मदाह कर लिया।

→ मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मा की हत्या कर दी।

→ गौड शासक शशांक ने राज्यवर्धन की हत्या कर दी।
(W. Bengal).

→ हर्ष ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को जीत लिया [स

→ सम्भवतया शशांक की मृत्यु के पश्चात् उसने गौड़ (बंगाल) को भी जीत लिया।

→ हर्ष ने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया।

→ चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन II ने हर्ष को नर्मदा नदी के तट पर पराजित किया।

* यह जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।

→ ऐहोल अभिलेख में हर्ष को उत्तरापथस्वामी कहा गया है।

→ चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्ष के समय भारत आया।

→ ह्वेनसांग बौद्ध धर्म की शिक्षा /जानकारी हेतु भारत आया।

→ ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया एवं कालान्तर में वहाँ अध्यापक बन गया।

→ ह्वेनसांग हर्षवर्धन की प्रशंसा करता है।

→ ह्वेनसांग ने दक्षिण भारत की यात्रा की।

→ वह (ह्वेनसांग) नरसिंहवर्मन तथा पुलकेशिन II का उल्लेख करता है।

→ ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा भी की।

→ ह्वेनसांग की पुस्तक = सी-यू-की

→ हर्ष ने कन्नौज में सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन करवाया।

* ह्वेनसांग ने इसकी अध्यक्षता की इस कारण ब्राह्मणों ने हर्ष का विरोध किया था।

→ हर्ष प्रत्येक 5 वर्ष पश्चात् प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन करवाता था।

* हर्ष प्रयाग में अपनी समस्त सम्पत्ति दान में देता था।

→ 6th महामोक्ष परिषद् में ह्वेनसांग ने हिस्सा लिया था।

→ हर्ष विद्वान शासक था।

→ हर्ष की पुस्तकें व नाटक -

① नागानन्द (पुस्तक)

② प्रियदर्शिका

③ रत्नावली

→ हर्ष के दरबारी विद्वान –

~~④ कादम्बरी~~

① बाणभट्ट : हर्षचरित
कादम्बरी
चण्डीशतक

② मयूर : सूर्यशतक

③ मातंग दिवाकर

संगमकाल

→ संगम का शाब्दिक अर्थ संघ या परिषद् होता है।

→ तमिल साहित्य का सङ्कलन करने के लिए तीन संगमों का आयोजन किया गया।

→ संगमों को संरक्षण पाण्ड्य शासकों ने दिया।

→ संगम साहित्य में चेर, चोल, पाण्ड्य वंश की जानकारी मिलती है।

→ संगमकाल 1st - 3rd शताब्दी

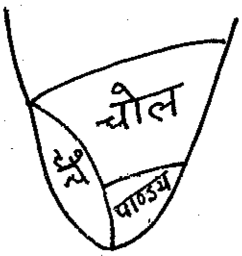

प्रथम संगम -

→ स्थान = मदुरै

→ अध्यक्ष = आगस्त्य ऋषि

☆ इस संगम की एक भी पुस्तक नहीं मिलती।

→ आगस्त्य ऋषि एवं कौंडिन्य ब्राह्मण को वैदिक संस्कृति सर्वप्रथम दक्षिण भारत ले जाने का श्रेय जाता है।

→ संरक्षण = पाण्ड्य

द्वितीय संगम -

→ स्थान = कपाटपुरम्

→ अध्यक्ष = आगस्त्य ऋषि
(ii) तोलक्कापियर

→ पुस्तक = तोलक्कापियम्
* Content = तमिल व्याकरण

तृतीय संगम -

→ स्थान = उत्तरी मदुरै

→ अध्यक्ष = नक्कीरर

→ पुस्तक : ऐतुतोके (8 भजनों का सङ्कलन)
पतुपातु (10 भजनों का सङ्कलन)

→ लेखक का नाम	पुस्तक
① इलंगो आदिगल	शिल्लपादिकारम् * कोवलन व कण्गी की कहानी * यह महिला प्रधान पुस्तक है। * इस पुस्तक नुपूर की कथा/कहानी भी कहते हैं।
② सीतले सतनार	मणिमेखले * मणि कोवलन एवं माधवी की बेटी थी। * मणि ने बौद्ध धर्म अपना लिया एवं साध्वी बन गई।
③ तीरुत्तक देवर * यह जैन साधु था।	जिवक चिन्तामणि * जिवक चोल राजकुमार था। * इसने 8 विवाह किए एवं साधु बन गया। * इसे विवाहग्रन्थ भी कहते हैं।
④ तिरुवल्लुवर	कुरल

चेर वंश

→ दक्षिण भारत का प्राचीनतम वंश है।
→ तमिल साहित्य में सर्वाधिक उल्लेख चेर वंश का मिलता है।
→ ऐतरेय ब्राह्मण एवं महाभारत में चेर वंश का उल्लेख मिलता है।
→ तमिल साहित्य एवं अभिलेखों में इन्हें केरलपुत कहा गया है।
→ प्रसिद्ध शासक –

① उदयिन जेरल :-
* इसने विशाल पाकशाला का निर्माण करवाया।
* महाभारत के योद्धाओं को भोज दिया था।

② नेदुन / नेडुन जेरल :-
* इसने यवन व्यापारियों को बन्दी बना लिया था एवं उनको मुक्त करने के बदले में बड़ी मात्रा में धन वसूला।

③ शेन गट्टुवन :-
* प्रसिद्ध शासक
* इसे लाल चेर एवं भला चेर कहा जाता है।

→ चेरों की राजधानी = वांजि / वांचि करुर
→ प्रतीक = धनुष

चोल

→ राजधानी = उरेयूर

→ प्रतीक = बाघ

→ प्रसिद्ध शासक -

करिकाल :-

* संगमकाल एवं चोल का सबसे महान शासक
* करिकाल का शाब्दिक अर्थ = जले हुए पैर वाला
* अष्टाध्यायी ~~की~~ में चोल वंश का उल्लेख मिलता है।

पाण्ड्य वंश

→ राजधानी = मदुरै

→ प्रतीक = कार्प (मछली)

→ मेगस्थनीज पाण्ड्य राज्य का उल्लेख करता है एवं उसे माबर देश कहता है।

→ माबर देश मोतियों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।

→ मेगस्थनीज के अनुसार माबर देश में हेराक्ट की पुत्री का शासन है

संगमकालीन व्यापार - वाणिज्य

→ व्यापार - वाणिज्य अच्छी अवस्था में था।

→ रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार होता था।

→ अरिकामेडु (पांडिचेरी) से रोमन सिक्के मिलते हैं।

→ प्रमुख बन्दरगाह -

① तोण्डी ② मुशीरी ③ उरेयूर ④ बन्दर ⑤ अरिकामेडु ⑥ पुहार ⑦ शालियुर etc.

→ आयात की जाने वाली वस्तुएँ : सोना जवाहरात
चाँदी
घोड़े
शराब
काँच

→ निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ : सूती वस्त्र
भारतीय मसाले (काली मिर्च)
लकड़ी
कछुए
नील etc.

चालुक्य पल्लव संघर्ष

चालुक्य -

चालुक्य

- वातापी → संस्थापक - जयसिंह
- कल्याणी → तैलप II
- वेंगी → विष्णुवर्धन

वातापी / बादामी के चालुक्य -

→ संस्थापक = जयसिंह

→ दूसरा शासक = रणराग

* यह गदायुद्ध (mace) में निपुण था।

* ~~पुलकेशिन~~

→ पुलकेशिन I

→ कीर्तिवर्मन I - वातापी का निर्माता

→ मंगलेश - इसके भतीजे पुलकेशिन II ने इसकी हत्या कर दी।

→ पुलकेशिन II

* इसने पल्लव वंश के शासक महेन्द्रवर्मन को पराजित किया एवं उसके साम्राज्य के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया एवं अपने छोटे भाई विष्णुवर्धन को वहाँ का शासक बनाया जिन्हें वेंगी के चालुक्य कहा जाता है।

* इसने हर्षवर्धन को पराजित किया एवं परमेश्वर की उपाधि धारण की

* चीनी यात्री ह्वेनसांग इसे शक्तिशाली शासक बताता है।

* पुलकेशिन II एवं हर्षवर्धन के युद्ध की जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।

- ऐहोल अभिलेख का लेखक रविकीर्ति है।
- ऐहोल अभिलेख ब्राह्मी लिपि एवं संस्कृत भाषा में है।
- ऐहोल अभिलेख में महाभारत युद्ध का उल्लेख भी मिलता है।
- इस अभिलेख में रविकीर्ति अपनी तुलना कालिदास एवं भारवि से करता है।

→ कीर्तिवर्मन II
* इस वंश का अन्तिम शासक
* दन्तिदुर्ग ने इसकी हत्या करके राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।

<u>कल्याणी के चालुक्य</u> -

→ तैलप II (संस्थापक)
* साहित्य में इसे कृष्ण का अवतार बताया गया है।

→ विक्रमादित्य VI
* इसके दरबारी : विल्हण → विक्रमांकदेवचरित
  मेधातिथी → मीताक्षरा (मनुस्मृति पर टीका)

→ सोमेश्वर III
* यह एक विद्वान शासक था।
* Imp. पुस्तक = मानसोल्लास
  - ⊙ Content = शिल्प शास्त्र
  - ⊙ इसमें भोजन बनाने की विधियाँ भी उल्लेखित हैं।

mains.

चालुक्यकालीन कला

- वातापी / बादामी
  - ① शिवालय
  - ② गुफा
- ऐहोल
  - 70 मन्दिर
    - ① मैंगुती जैन
    - ② लाडुखाँ
    - ③ माँ दुर्गा
- पटडुकल / पतडुकल
  - 10 मन्दिर
    - नागर (4)
      - पापनाथ
    - द्रविड (6)
      - ① विरुपाक्ष
      - ② संगमेश्वर

→ मैंगुती जैन मन्दिर का निर्माण रविकीर्ति ने करवाया था।

→ पतडुकल के (कुछ) मन्दिरों का निर्माण विक्रमादित्य II की पत्नी महादेवी ने करवाया था।

→ चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार चालुक्य शासक शिक्षा के व्यसनी थे

→ दुर्विनीत : शब्दावतार

→ पण्डित उदयदेव : जैनेन्द्र व्याकरण

→ सोमदेव सूरि : नीति वाक्यामृत

→ कल्याणी के चालुक्य शासकों की रचनाएँ (Do copy)

पल्लव -

→ पल्लव शब्द की उत्पत्ति पान (पत्ता) से हुई।

→ पल्लव शासक भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे।

→ अभिलेखों में इन्हें क्षत्रिय बताया (गया) है।

→ सिंहवर्मा / सिंहवर्मन (संस्थापक)

→ विष्णुगोप -

* हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त ने विष्णुगोप को पराजित किया था।

→ सिंह विष्णु -

* किरातअर्जुनियम का लेखक भारवि इसके दरबार में था।

→ महेन्द्रवर्मन -

* उपाधि = मतविलास
* यह विद्वान शासक था।
* पुस्तक = 1. मतविलास प्रहसन
    - इसमें बौद्ध भिक्षुओं एवं कापालिकों पर व्यंग्य किया गया है।

  2. भगवतज्जुदियम प्रहसन

* इसके समय स्थापत्य कला के प्रथम चरण (महेन्द्रवर्मन शैली) का आरम्भ हुआ।

→ नरसिंहवर्मन I -

* इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक
* उपाधि = मामल्ल
* इसने मामल्लपुरम् नामक शहर बसाया जिसे वर्तमान में महाबलिपुरम् कहा जाता है।
* इसने वहाँ रथमन्दिरों के निर्माण करवाए।
* इसने पुलकेशिन II को पराजित किया एवं वातापीकोण्ड की उपाधि धारण की।

→ नरसिंहवर्मन II

* उपाधि = राजसिंह
* इसके समय मन्दिर स्थापत्य कला का तीसरा चरण स्थापित हुआ।

→ नन्दीवर्मन II

mains.

पल्लवकालीन कला

→ द्रविड़ मन्दिर स्थापत्य कला का आरम्भ पल्लववंश में हुआ।

→ इसका विकास चार चरणों में हुआ।

① महेन्द्रवर्मन शैली -

* इस समय गुफाओं का निर्माण हुआ जिन्हें मण्डप कहा जाता है।
* इनमें 1 या 2 कक्ष होते हैं।

② नरसिंहवर्मन I / मामल्ल शैली -

* इस चरण में 3 या 5 कक्ष वाले मण्डप बने।
* महाबलिपुरम् में रथमन्दिर (पाण्डव मन्दिर, सप्तपैगोडा) का निर्माण हुआ।

- यह एकाश्मक पत्थर से बनाए गए मन्दिर हैं।
- इन मन्दिरों की संख्या 8 है।

* प्रमुख मन्दिर :-

(i) युधिष्ठिर का रथ / मन्दिर

- सबसे सुन्दर मन्दिर है।

(ii) अर्जुन का रथ

(iii) भीम का रथ

(iv) नकुल, सहदेव का रथ

(v) द्रौपदी का रथ
- सबसे साधारण मन्दिर
- सबसे छोटा

(vi) गणेश मन्दिर

(vii) पीदारी मन्दिर

③ नरसिंहवर्मन II / राजसिंह शैली -

* पल्लव मन्दिर स्थापत्य कला का स्वर्णकाल
* छोटे-छोटे पत्थरों को जोड़कर मन्दिरों का निर्माण आरम्भ हुआ।
* महाबलिपुरम् का तटीय मन्दिर
- इस शैली का प्रथम मन्दिर
* काँची का कैलाश मन्दिर

④ नन्दीवर्मन II शैली -

* पल्लव मन्दिर स्थापत्य कला का पतन हुआ।
* इस समय छोटे-छोटे मन्दिरों का निर्माण आरम्भ हुआ लेकिन अलङ्करण पर विशेष ध्यान दिया गया।
* प्रमुख मन्दिर -

(i) वैकुण्ठ पेरिमल

(ii) मुक्तेश्वर / मतंगेश्वर

→ पल्लवकाल में आलवार एवं नयनार सन्तों ने भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ किया।

→ पल्लवशासकों ने शिक्षा के केंद्रों का निर्माण करवाया जिन्हें घटिका कहा जाता था।

→ पल्लवशासकों ने भारवि (किरातार्जुनियम) एवं दण्डिन् (दशकुमारचरित, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरी) जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।

→ काँची उस समय शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।

चोल

1. विजयालय - संस्थापक

2. आदित्य I -

→ इसने पल्लवों को पराजित कर चोलों की स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

★★★

3. परान्तक I -

→ इसका उत्तरमेरुर अभिलेख मिलता है।

* जिसमें स्थानीय स्वशासन की जानकारी मिलती है।

* ब्राह्मणों को भूमि का अनुदान दिया जाता था जिसके प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन गाँव स्वयं करता था।

* गाँव को 30 भागों में विभाजित किया जाता था।

* 30 सदस्यों की इस समिति को सभा / समिति / उर कहा जाता था।

* सदस्य बनने हेतु कुछ योग्यताएँ जरूरी थीं -

(i) स्वयं का मकान

(ii) $1\frac{1}{2}$ एकड़ (कम से कम) जमीन

(iii) वेदों का ज्ञान

(iv) आपराधिक प्रवृत्ति का न होना

(v) एक सदस्य एक बार ही

* लॉटरी का चयन बच्चे करते थे।

4. परान्तक II -

→ सुन्दर चोल के रूप में प्रसिद्ध

→ ~~उत्त~~

5. उत्तम चोल -
→ इसने चाँदी के सिक्के चलाए।

6. अरिमोलीवर्मन -
→ उपाधि = राजराज
→ इसने लौह एवं रक्त की नीति को अपनाया।
→ इसने श्रीलंका के शासक महेन्द्र V को पराजित किया एवं श्रीलंका की राजधानी अनुराधापुर को तहस-नहस कर दिया।
→ इसने उत्तरी श्रीलंका पर अधिकार कर लिया।
→ इसने तंजौर में वृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया।
* जिसे राजराजेश्वर मन्दिर कहा जाता है।
* यह 1010 में बनकर तैयार हुआ था।
* 2010 में RBI ने 1000 ₹ का सिक्का जारी किया।
* राजराजेश्वर मन्दिर अपने विमान के लिए प्रसिद्ध है।
↳ शिखर (पिरामाडाकार व अष्टआकृति

7. राजेन्द्र I [1014 - 1044 AD]
→ इस वंश का सबसे महान शासक
→ इसने अपने पिता की नीति को जारी रखा।
→ इसने महेन्द्र V की हत्या कर, सम्पूर्ण श्रीलंका पर अधिकार कर लिया।
→ इसने A & N द्वीप समूह को जीत लिया।
→ इसने जावा, सुमात्रा, सुदीमन आदि क्षेत्रों को जीत लिया।
→ इसने गंगा नदी तक सभी राज्यों को जीत लिया।
→ पाल वंश के शासक महिपाल को पराजित किया।

→ इसने गंगेकोण्ड की उपाधि धारण की।

→ गंगेकोण्ड-चोलपुरम् को अपनी राजधानी बनाया।

→ गंगेकोण्ड चोलेश्वर मन्दिर तथा गंगेचोलम् तालाब का निर्माण करवाया।

8. राजेन्द्र II - इसका राज्याभिषेक युद्ध के मैदान में हुआ।

9. अधिराजेन्द्र -

→ जनता ने इसकी हत्या कर दी।

10. कुलोतुंग -

→ इसने भगवान विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फिंकवा दिया था।

Note - चोल शासकों की विशेषताएँ -

① स्थानीय स्वशासन

② बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील कहा जाता था (विशाल नौसेना)

③ शैव धर्म को संरक्षण

④ नटराज की मूर्ति इस समय बनना आरम्भ हुई।

⑤ राजधानी = तंजौर / तंजापुर

चोलकालीन स्थापत्य कला

चोल
↓
कला

- पल्लव प्रभाव
  ↓
  ① विजयालय : नात्तमलाई में चोलेश्वर मन्दिर का निर्माण
- चोल प्रभाव
  ↓
  ① राजराज / अरिमोलीवर्मन : वृहदेश्वर मन्दिर (तंजौर)
  - * यह विशाल विमान के लिए प्रसिद्ध
  - * South India का tallest

② परान्तक I : श्रीनिवासनल्लूर में कोरंगनाथ मन्दिर

* इसका 4 मंजिला विमान है।
* इसमें सरस्वती, माँ दुर्गा व मा लक्ष्मी की, तक्षण मूर्तियाँ मिलती हैं। सुन्दर 37

② राजेन्द्र I :

- गंगैकोण्डचोलपुरम् में गंगैकोण्डचोलेश्वर मन्दिर

→ अन्य प्रसिद्ध मन्दिर -

(i) एरावतेश्वर (दारासुरम्)

(ii) कम्पारेश्वर (त्रिभुवनम्)

• ये प्रसिद्ध चोलकालिक मन्दिर हैं।

→ चोलकालीन मन्दिरों से नटराज, शिव, विष्णु एवं अन्य देवी-देवताओं की सुन्दर मूर्तियाँ मिलती हैं।

→ दारासुरम् विशाल मूर्तियों का केंद्र था।

→ इन मन्दिरों की दीवारों से धार्मिक चित्र भी मिलते हैं।

* जिसमें रामायण, महाभारत व भगवान शिव से सम्बन्धित चित्र प्रसिद्ध हैं।

<u>त्रिपक्षीय संघर्ष</u> -

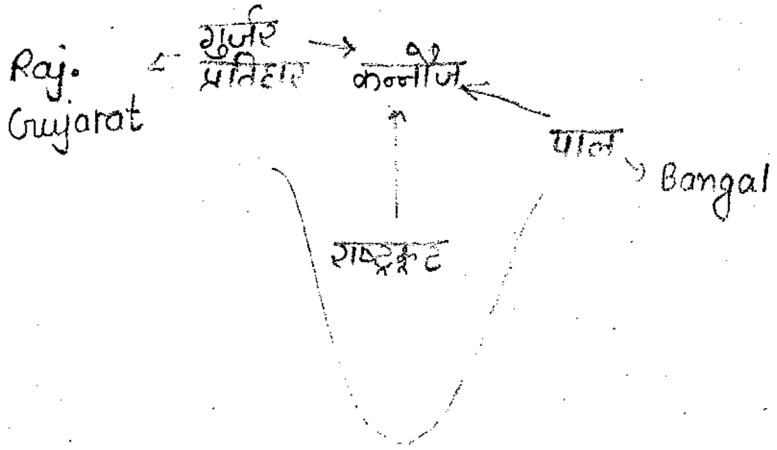

→ हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज में राजनीतिक शून्यता आ गई थी।

→ कन्नौज में आयुध वंश के शासक चक्रायुध व इन्द्रायुध का शासन था।

→ इन दोनों भाइयों में भी संघर्ष था।

→ गुर्जर प्रतिहार वंश, पाल वंश तथा राष्ट्रकूट वंश ने कन्नौज पर अधिकार करने का प्रयास किया।

गुर्जर प्रतिहार वंश -

हरिश्चन्द्र - आदि पुरुष / संस्थापक

→ गुर्जर प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण का वंशज मानते हैं।

→ इनकी आरम्भिक राजधानी मंडोर थी।

→ कालान्तर में भीनमाल को अपनी राजधानी बनाया।

→ प्रतिहार = द्वारपाल

नागभट्ट I -

→ ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट ने कासिम के उत्तराधिकारी जुनैद को पराजित किया (अरबों को पराजित किया)

→ वास्तविक संस्थापक

वत्सराज -

→ इसके समय त्रिपक्षीय संघर्ष आरम्भ हुआ।

मिहिरभोज -

→ यह विद्वान शासक था।

→ उपाधियाँ = आदि वराह
प्रभास

→ इसके समय अरब यात्री सुलेमान ने भारत की यात्रा की।

* सुलेमान मिहिरभोज को अरबों का स्वाभाविक शत्रु बताता है।

* सुलेमान देवपाल को उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताता है।

महेन्द्रपाल -

→ राजशेखर इसके गुरु थे जो इसके दरबारी थे।

→ पुस्तकें (राजशेखर की) = काव्यमीमांसा
mains
विशाल भंजिका
कर्पूर मञ्जरी
हरविलास
बालरामायण

→ यशपाल -
इस वंश का अन्तिम शासक

राष्ट्रकूट वंश -

→ संस्थापक = दन्तिदुर्ग

कृष्ण I -

→ इसने एलोरा के कैलास मन्दिर का निर्माण करवाया।

→ राष्ट्रकूट शासकोंने ऐलोरा की 34 गुफाओं का निर्माण करवाया।

* इन गुफाओं का सम्बन्ध हिन्दू धर्म, जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म से है।

→ ऐलोरा का कैलास मन्दिर एकाश्मक है।

ध्रुव -

→ उपाधि = धारावर्ष

अमोघवर्ष -

→ यह जैन धर्म का अनुयायी था।

→ यह माता लक्ष्मी का भक्त था।

→ विद्वान शासक था।

→ पुस्तकें = कविराजमार्ग
रत्नामालिका

→ इसके दरबार में कुछ विद्वान थे।

→ दरबारी विद्वान -

① शक्तायन -

→ पुस्तक = अमोघवृत्ति

② जिनसेन - आदिपुराण

③ महावीराचार्य - गणितसारसंग्रह

→ अमोघवर्ष की पुत्री चन्द्रोवल्लबे को रायचूर दोआब का राजस्व मिलता था।

कृष्ण III :-

→ इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक I को पराजित किया।

पाल वंश -

गोपाल -

→ इसका चुनाव किया गया था।

→ पाल वंश अन्तिम वंश था जिन्होंने बौद्ध (महायान) धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

→ इसने ओदन्तपुरी विहार का निर्माण करवाया।

धर्मपाल -

→ इस वंश का सबसे महान शासक

→ इसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया।

→ नालन्दा विश्वविद्यालय में सुधार किए।

→ सोमपुरी विहार, पहाड़पुर विहार (Bangladesh) का निर्माण करवाया।

→ गुजराती कवि सोड्ढल ने इसे उत्तरापथस्वामी कहा है।

देवपाल

नारायणपाल

महिपाल -

→ पाल वंश का दूसरा संस्थापक

रामपाल -

→ इसके दरबार में सन्ध्याकर नन्दी थे जिन्होंने रामचरित की रचना की।

* रामचरित में कैवर्त किसान विद्रोह का उल्लेख मिलता है।

गुर्जर प्रतिहार शासकों का सांस्कृतिक योगदान -

→ गुर्जर प्रतिहार शासकों के समय मारु / मरु गुर्जरा मन्दिर स्थापत्य शैली विकसित हुई।

→ यह नागर शैली की उपशैली है।

→ मिहिरभोज ने तेली का मन्दिर (ग्वालियर फोर्ट) का निर्माण करवाया।

→ तेली के मन्दिर के आसपास से गुर्जर प्रतिहार शासकों के समय की मूर्तियाँ एवं स्तम्भ मिलते हैं।

→ इस समय ग्वालियर में जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों का निर्माण किया गया।

→ बाड़ोली (रावतभाटा) से 8 मन्दिरों का एक समूह मिलता है जिसमें घटेश्वर मन्दिर, गणेश मन्दिर, शिव मन्दिर, त्रिमूर्ति मन्दिर प्रसिद्ध है।

→ ग्वालियर के पास बटेश्वर मन्दिर समूह (200) मिलते हैं।

त्रिपक्षीय संघर्ष के छः चरण -

प्रथम चरण -

वत्सराज v/s धर्मपाल
↓ ↓
गुर्जर प्रतिहार पाल वंश
↓
जीत गया

वत्सराज v/s ध्रुव
↓
राष्ट्रकूट
↓
जीत गया

द्वितीय चरण –

नागभट्ट II V/s धर्मपाल
↓ ↓
गुर्जर प्रतिहार पाल
↓
जीत गया

नागभट्ट II V/s गोविन्द III
↓
राष्ट्रकूट
↓
जीत गया

☆ राष्ट्रकूटों ने तीसरे एवं चौथे चरण में हिस्सा नहीं लिया।

तृतीय चरण –

मिहिरभोज V/s देवपाल
↓
जीत गया

चतुर्थ चरण –

मिहिरभोज V/s नारायणपाल
↓
जीत गया

☆ 5th एवं 6th चरण में पाल वंश ने हिस्सा नहीं लिया।

पाँचवा चरण –

महेन्द्रपाल V/s इन्द्र III
↓ ↓
गुर्जर प्रतिहार जीत गया

छठाँ चरण –

महेन्द्रपाल V/s इन्द्र III
↓
जीत गया

☆ राष्ट्रकूट इस संघर्ष में कभी पराजित नहीं हुए।

→ अन्तत: गुर्जर प्रतिहारों ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

mains मन्दिर स्थापत्य कला

→ भारत में तीन शैलियाँ प्रचलित हैं-

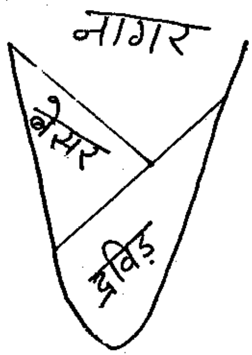

→ मन्दिर के प्रमुख भाग-

① गर्भगृह →

② मण्डप

→ गर्भगृह के सामने स्तम्भों पर टिका हुआ भाग मण्डप कहलाता है।

③ अर्द्ध मण्डप

④ अन्तराल :- गर्भगृह एवं मण्डप को जोड़ने वाला हिस्सा

⑤ परिक्रमा / प्रदक्षिणा पथ

→ **नागर शैली-**

विशेषताएँ-

① ऊँचा चबूतरा

② शिखर : जो क्रमश: ऊपर की तरफ छोटा होता जाता है

③ वर्गाकार गर्भगृह

④ गर्भगृह से जुड़ा हुआ परिक्रमा पथ

→ प्रमुख मन्दिर -

1. सहस्त्रबाहू मन्दिर (ग्वालियर)
2. कन्दारिया महादेव मन्दिर } खजुराहो
3. लक्ष्मण मन्दिर } खजुराहो
4. मतंगेश्वर महादेव मन्दिर } खजुराहो

* खजुराहो मन्दिरों का निर्माण चन्देल शासकों ने करवाया।
* खजुराहो उनकी धार्मिक राजधानी थी।
* राजनीतिक राजधानी = महोबा

द्रविड शैली -

विशेषताएँ -

1. विशाल प्रांगण
2. भव्य गोपुरम्
3. पानी का तालाब
4. वर्गाकार गर्भगृह
5. ढका हुआ प्रदक्षिणा पथ
6. विमान : जो अष्टकोणीय एवं पिरामिडाकार होता है।
7. रङ्गो का प्रयोग

प्रमुख मन्दिर -

1. मीनाक्षी मन्दिर (मदुरै)
2. विरुपाक्ष मन्दिर (आम्भी) etc.

बेसर शैली -

→ यह मिश्रित शैली है।

→ निर्माण = नागर शैली

→ अलङ्करण = द्रविड़ शैली

प्रमुख मन्दिर -

① होयसलेश्वर मन्दिर